VISIT…

LANZAROTE Caliente.COM



प्रस्तावना

आइये हिन्दी में बातचीत करें

भाग एक

नमस्ते!
कृपया सुनिये।
मैं अध्यापक हूं।
आप विद्यार्थी हैं।
मैं भारतीय हूं।
भारत एक विशाल देश है।
इसमें कई राज्य हैं।
हर एक राज्य की अपनी-अपनी भाषा है।
भारत की राजभाषा हिन्दी है।
मैं हिन्दी बोलता हूं।
आप हिन्दी नहीं बोलते।
इस समय मैं हिन्दी बोल रहा हूं।



१. मेज

यह मेज है।[1]

यह ग्रामोफ़ोन है।[2]



२. ग्रामोफ़ोन

यह रेकार्ड है।[3]



३. रेकॉर्ड

रेकार्ड ग्रामोफ़ोन पर है।
ग्रामोफ़ोन मेज़ पर है।[4]
आप कुर्सी पर बैठे हैं।

कुर्सी मेज के नज़दीक है।
आपके हाथ में पुस्तक है।
यह पुस्तक खुली है।[5]
आप पुस्तक देख रहे हैं।
आप रेकार्ड सुन रहे हैं।
आप मेरी आवाज़ सुन रहे हैं।
आप हिन्दी बोलना, समझना और पढ़ना-लिखना सीख रहे हैं।
मैं धीरे-धीरे बोल रहा हूं।
जब मैं धीरे-धीरे बोलता हूं, आप मेरी बात समझते हैं।
जब मैं जल्दी-जल्दी बोलता हूं, आप मेरी बात नहीं समझते।[6]



४. ग्रामोफ़ोन मेज पर है।



५. पुस्तक खुली है



६. जब मैं जल्दी-जल्दी बोलता हूं, आप मेरी बात नहीं समझते



प्रस्तावना

आइये हिन्दी में बातचीत करें

भाग–दो

नमस्ते। कहिये आप कैसे हैं?
मैं अच्छी तरह हूं। धन्यवाद।
कृपया अब आप मेरे प्रश्नों का उत्तर दीजिये।
क्या मैं अध्यापक हूं?
जी हां, आप अध्यापक हैं।
क्या आप विद्यार्थी हैं?
जी हां, मैं विद्यार्थी हूं।
क्या मैं भारतीय हूं?
जी हां, आप भारतीय हैं।
अध्यापक कौन है, आप या मैं?
अध्यापक आप हैं।
और, विद्यार्थी कौन है?
विद्यार्थी मैं हूं।
क्या मैं हिन्दी में बोलता हूं?
जी हां, आप हिन्दी में बोलते हैं।



१. नमस्ते।

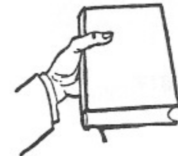
क्या मैं इस समय हिन्दी बोल रहा हूं?
जी हां, आप इस समय हिन्दी बोल रहे हैं।
क्या आप हिन्दी बोलते हैं?
जी हां, मैं हिन्दी बोलता हूं, पर बहुत कम।
यह क्या है?
यह एक रेकार्ड है।
रेकार्ड कहां है?
रेकार्ड ग्रामोफ़ोन पर है।
और ग्रामोफ़ोन कहां है?
ग्रामोफोन मेज पर है।
क्या यह पुस्तक है?
जी हां, यह पुस्तक है।
क्या यह भी पुस्तक है?
जी नहीं, यह पुस्तक नहीं है, रेकार्ड है।
आप कहां बैठे हैं?
मैं कुर्सी पर बैठा हूं।
आप क्या सुन रहे हैं?
मैं रेकार्ड सुन रहा हूं।
आप किसकी आवाज़ सुन रहे हैं?
मैं आपकी आवाज़ सुन रहा हूं।
आप क्या देख रहे हैं?
मैं अपनी पुस्तक देख रहा हूं।
क्या पुस्तक बन्द है?
जी नहीं, पुस्तक बन्द नहीं है। पुस्तक खुली है।
आप क्या सीख रहे हैं?
मैं हिन्दी सीख रहा हूं।
जब मैं धीरे–धीरे बोलता हूं, तो क्या आप मेरी बात समझते हैं?
जी हां, मैं समझता हूं।
और, जब मैं जल्दी–जल्दी बोलता हूं, तो क्या आप मेरी बात समझते हैं?
जी नहीं, मैं नहीं समझता।



२. यह क्या है?



३. रिकार्ड ग्रामोफ़ोन पर है



४. क्या यह पुस्तक है?



५. क्या यह भी पुस्तक है?



१. मेरी पत्नी, श्रीमती सुधा
२. मेरा लड़का, गोपाल
३. मेरी लड़की, राधा
४. मैं, श्री आलोक
५. आराम कुर्सी
६. खिड़की

पाठ एक : १ :

पहला : १ला : पाठ

मेरा परिवार

यह मेरा परिवार है।
इस परिवार में हैं--मेरी पत्नी, मेरा पुत्र, मेरी पुत्री और मैं।
मेरा नाम आलोक है।
मेरी पत्नी का नाम सुधा है।
मैं सुधा का पति हूं।
मैं पुरुष हूं।
मेरी पत्नी स्त्री है।
हमारे दो बच्चे हैं—एक लड़का और एक लड़की।
लड़के का नाम गोपाल है।



१. पुरुष २. स्त्री

वह बारह वर्ष का है।
लड़की का नाम राधा है।
वह आठ वर्ष की है।
वह गोपाल से चार वर्ष छोटी है।
गोपाल उससे चार वर्ष बड़ा है।
राधा परिवार में सबसे छोटी है और मैं सबसे बड़ा हूं।
गोपाल राधा का भाई है।
राधा गोपाल की बहन है।
गोपाल मेरा पुत्र है।
मैं उसका पिता हूं।
मेरी पत्नी उसकी माता है।
राधा मेरी पुत्री है।
मैं उसका पिता हूं।
मेरी पत्नी उसकी माता है।
गोपाल और राधा हमारे बच्चे हैं।
मैं उनका पिता हूं।
मेरी पत्नी उनकी माता है।
हम उनके माता-पिता हैं।
हम अपने बच्चों से प्रेम करते हैं।
मेरी पत्नी आराम–कुर्सी पर बैठी पुस्तक पढ़ रही है।
राधा गुड़िया से खेल रही है।
मैं खिड़की के पास खड़ा हूं और सिगरेट पी रहा हूं।
गोपाल फ़र्श पर बैठा है और रेलगाड़ी से खेल रहा है।
कुत्ता और बिल्ली दोनों मेज के नीचे लेटे हैं।



४. लड़की ३. लड़का



५. माता-पिता



६. कुत्ता



७. बिल्ली



पाठ दो : २ :

दूसरा : २रा : पाठ

प्रश्न और उत्तर

मैं कौन हूं?
आप श्री आलोक हैं।
मैं किसका पति हूं?
आप श्रीमती सुधा आलोक के पति हैं।
मेरे पुत्र का नाम क्या है?
उसका नाम गोपाल है।
आपका क्या नाम है?
मेरा नाम रमेश है।
मेरे कितने बच्चे हैं—एक या दो?
आपके दो बच्चे हैं।
क्या राधा मेरी पुत्री है?
जी हां, वह आपकी पुत्री है।



१ सुधा

वह कितने वर्ष की है?
वह आठ वर्ष की है।
क्या वह पुस्तक पढ़ रही है?
जी नहीं, वह पुस्तक नहीं पढ़ रही।
वह क्या कर रही है?
वह गुड़ियां से खेल रही है।
गोपाल किस चीज से खेल रहा है?
वह अपनी रेलगाड़ी से खेल रहा है।
क्या गोपाल के कोई भाई है?
जी नहीं, उसके कोई भाई नहीं है।
क्या आपके कोई भाई है?
जी हां, है।
कितने हैं?
दो।
सिगरेट कौन पी रहा है?
आप पी रहे हैं।
क्या आप सिगरेट पीते हैं?
जी नहीं।
क्या आपके पिताजी सिगरेट पीते हैं।
जी हां, पीते हैं।
क्या भारत में स्त्रियां सिगरेट पीती हैं?
प्रायः नहीं पीतीं।



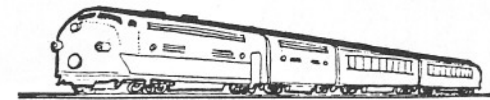
२. दो बच्चे



३. गुड़िया से खेल रही है



५. सिगरेट पीना



४. रेलगाड़ी



१. नीचे की मंजिल
२. पहली मंजिल
३. छत
४. बागीचा

पाठ तीन : ३ :

तीसरा : ३रा : पाठ

हमारा मकान

बम्बई में ऊंचे-ऊंचे भवन हैं।
वहां प्रायः लोग फ़्लैटों में रहते हैं।
बहुतसे लोग उपनगरों में अपने मकानों में रहते हैं।
मैं भी बम्बई के एक उपनगर में रहता हूं।
वहां मेरा छोटासा मकान है।
मैंने इसे लगभग पन्द्रह वर्ष पहले खरीदा था।
मेरा एक छोटासा मकान गांव में भी है।
गांव के मकान में केवल एक मंज़िल है।
इस की दो मंज़िलें हैं।
नीचे की मंज़िल और ऊपर की, या पहली मंज़िल।



१. रसोईघर



२. छड़ी

नीचे की मंज़िल में बैठक रसोईघर[1], दालान और भोजन-कक्ष हैं।
दालान में छड़ी[2], छाता आदि टांगने के लिए खूंटियां लगी हैं।
एक भाग में एक गुसलखाना और शौचालय हैं।
ऊपर की मंज़िल पर जाने के लिए सीढ़ियां[3] हैं।
इस मंज़िल में दो सोने के कमरे और खुली छत है।



३. सीढ़ियां

घर के सामने एक छोटासा बाग़ीचा है।
इसमें हम बेला, गुलाब आदि के फूल[4] उगाते हैं।
घर के पीछे बड़ा बाग़ीचा है, जिसमें घास का मैदान और फलों के पेड़ हैं।
इस बाग़ीचे के एक भाग में तरकारियों की क्यारियां हैं।
इनमें हम सब प्रकार की तरकारियां[5], जैसे—आलू, टमाटर, गोभी, भिंडी आदि उगाते हैं।



४. फूल

घर के एक ओर गैरेज है।
यहां मैं अपनी कार[6] रखता हूं।
घर की एक चारदीवारी भी है, जिस में सामने की ओर एक फाटक है।



६. कार



५. तरकारियां



पाठ चार : ४ :
चौथा : ४था : पाठ

बातचीत

आइए, हम लोग अपने मकान के बारे में बातचीत करें।

क्या आप बता सकते हैं कि हम लोग कहां रहते हैं?

जी हां, आप बम्बई के एक उपनगर में रहते हैं।

बिल्कुल ठीक, अब आप बताइए कि यह मकान
बड़ा है या छोटा?

जी, न तो बहुत बड़ा है और न बहुत छोटा।

मैंने इसे कब ख़रीदा?

लगभग १५ वर्ष पहले आपने इसे ख़रीदा था।

क्या इसमें गैरेज है?

जी हां, है।

घर में कितने कमरे हैं?

ठहरिए, बतलाता हूं—एक, दो, तीन, चार, पांच,
छः — रसोईघर मिलाकर कुल छः कमरे हैं।



१. सोने का कमरा

सोने के कमरे ऊपर हैं या नीचे?

वे ऊपर की मंज़िल में हैं।

नीचे की मंज़िल में कौन-कौन से कमरे हैं?



२. बैठक

नीचे की मंज़िल में बैठक, रसोईघर, दालान,
ग़ुसलख़ाना, शौचालय और भोजन-कक्ष हैं।

क्या हमारे यहां बाग़ीचा भी है?

जी हां, है।

फूल कहां लगे हैं?



३. भोजन-कक्ष

सामने के बाग़ीचे में।

क्या उसमें फलों के पेड़ भी हैं?

जी नहीं, फलों के पेड़ पीछे के बाग़ीचे में हैं।

क्या हमारे यहां फलों के पेड़ बहुतसे हैं?



४. पेड़

नहीं, बहुत नहीं हैं, केवल थोड़ेसे हैं।

क्या आपको फल अच्छे लगते हैं?

जी हां, मुझे फल बहुत अच्छे लगते हैं।



५. फल



पाठ पांच : ५ :

पांचवां : ५वां : पाठ

हमारी बैठक

१. पुस्तकों की अल्मारी
२. सोफ़ा
३. आराम कुर्सी
४. सितार
५. तबला
६. कालीन
७. बिजली की बत्ती
८. पर्दा

आइए, हमारी बैठक का यह चित्र देखिए।
सामने एक सोफ़ा रखा है।
सोफ़े के पास एक अल्मारी है।
इसमें पुस्तकें रखी हैं।
बायीं ओर एक बड़ी खिड़की है।
खिड़की पर पर्दा लगा हुआ है।
खिड़की के नीचे एक छोटी मेज़ है,
जिस पर फूलदान रखा है।



१. फूलदान

दूसरी ओर एक बड़ी अल्मारी है, जिसमें तबला,
वीणा और सितार रखे हैं।
एक खाने में साहित्य और संगीत की पुस्तकें रखी हैं।
अल्मारी के दोनों ओर आराम-कुर्सियां रखी हैं।
एक वृद्ध महिला एक कुर्सी पर बैठी है।
दूसरी कुर्सी खाली है।
दीवार के ऊपर एक गोल दर्पण लगा है।
बायीं ओर बिजली का लैंप रखा है।

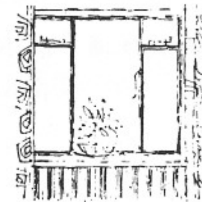


२. बिजली का लैंप

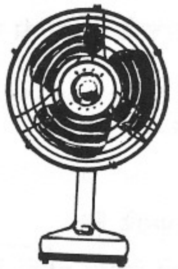
बैठक के मध्य भाग में एक छोटी गोल मेज़ है,
जिस पर राखदानी और कुछ समाचारपत्र भी हैं।
मेज़ के पास एक छोटी-सी कुर्सी है।
दायीं ओर कोने में रेडियोग्राम रखा है।
फ़र्श पर सुन्दर कालीन बिछा हुआ है।
छत के मध्य में बिजली का एक पंखा लटक रहा है।
पंखे के दोनों ओर एक-एक बिजली की बत्ती
लटक रही है।
रात को जब अंधेरा होने लगता है, तो हम
बत्ती जलाते हैं।
दिन में प्रकाश खिड़की से आता है।



३. छत का पंखा



४. खिड़की



टेबल फ़ैन



पाठ छः : ६ :
छठा : ६ठा : पाठ

हमारी बैठक के बारेमें
वार्तालाप

क्या हमारी बैठक में पुस्तकों की अल्मारी है?

जी हां, है।

क्या इसमें पुस्तकें हैं?

जी हां, हैं।

इसमें कितनी पुस्तकें हैं?

पता नहीं, इसमें कितनी पुस्तकें हैं। मैंने गिनी नहीं हैं।

खिड़की कहां है?

खिड़की सोफ़े के बायीं ओर है।

खिड़की के नीचे क्या है?

खिड़की के नीचे एक छोटी-सी मेज पर फूलदान है।

दर्पण गोल[१] है या चाकोर?

यह गोल है।

रेडियोग्राम के ऊपर कुछ रखा है?

जी नहीं, कुछ नहीं है।

छोटी मेज़ के ऊपर क्या है?

राखदानी[२] है।

क्या कुछ और भी है?

जी हां, कुछ समाचार-पत्र[३] हैं।

क्या कमरे में कुछ आराम-कुर्सियां हैं?

जी हां, दो आराम-कुर्सियां हैं।

क्या दाहिनी ओर की कुर्सी पर कोई बैठा है?

जी हां, एक वृद्ध महिला बैठी है।

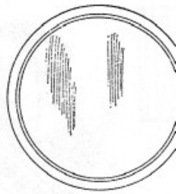
क्या बायीं ओर की कुर्सी पर भी कोई बैठा है?

जी नहीं, उस पर कोई नहीं बैठा है, और, सोफ़े[४] पर भी कोई नहीं है।

क्या आपको हमारी बैठक पसन्द आयी?

जी हां, मुझे आपकी बैठक बहुत पसन्द आयी।

मुझे प्रसन्नता है कि हमारी बैठक हरएक को पसन्द आती है।



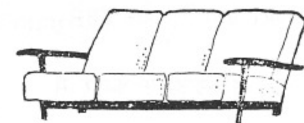
१. गोल



२. राखदानी



३. समाचार-पत्र



४. सोफ़ा

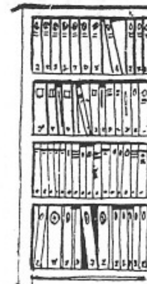


पाठ सात : ७ :

सातवां : ७वां : पाठ

तुलना

आइए, अब हमारी बैठक की तुलना राजेन्द्रजी की बैठक से करें।
राजेन्द्रजी का परिवार हमारे परिवार का मित्र है।
वे हमारे पड़ोसी हैं।
हमारा कमरा उनके कमरे से जरा बड़ा है, और इसमें अधिक फ़र्नीचर भी है।
जैसा कि आप चित्र में देखते हैं, राजेन्द्रजी के कमरे में रेडियोग्राम नहीं है।



१. पुस्तकों की अल्मारी

उसमें पुस्तकों की अल्मारी[१] भी नहीं है।
मेरी अल्मारी बैठक में है, पर उनकी अध्ययन-कक्ष में।

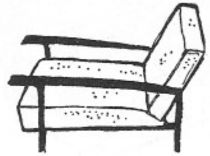


२. तबला



३. सितार

मेरी बैठक में बड़ी अल्मारी है, जिसमें हम संगीत के साज रखते हैं, परन्तु राजेन्द्रजी की बैठक में ऐसी कोई अल्मारी नहीं है।
हमारी इस अल्मारी में तबला[२] और सितार[३] रखे हैं।
राजेन्द्रजी की पत्नी और मेरी पत्नी दोनों को संगीत का बड़ा शौक है।
दोनों सितार बजाती हैं।
परन्तु मेरी पत्नी की अपेक्षा श्रीमती राजेन्द्र अधिक अच्छा बजाती हैं।
श्रीमती राजेन्द्र केवल मेरी पत्नी से ही अच्छा नहीं बजातीं, बल्कि वे हमारे मित्रों के क्षेत्र में सबसे अच्छा सितार बजाती हैं।
मैं सितार नहीं बजाता, मैं तबला बजाता हूं।



४. आराम कुर्सी

श्री राजेन्द्र की बैठक में सोफ़ा नहीं है और छोटी कुर्सियां भी नहीं हैं।
उनके घर में तीन आराम कुर्सियां हैं,[४] जबकि हमारे घर में केवल दो आराम कुर्सियां हैं।
राजेन्द्रजी के घर में दो फूलदान और एक घड़ी[५] है।
उनके घर में एक चित्र भी है।
यह चित्र एक प्रसिद्ध कलाकार ने बनाया था।



५. घड़ी



पाठ आठ : ८ :
आठवां : ८वां : पाठ

बैठक के बारे में और अधिक बातचीत

आपने श्री राजेन्द्र की और हमारी बैठक के विषय में काफ़ी जानकारी प्राप्त कर ली है।

अब मैं उनके विषय में कुछ प्रश्न पूछता हूं।

बताइये आपको किसकी बैठक अधिक अच्छी लगी है—राजेन्द्रजी की या हमारी?

दोनों ही अच्छी हैं, पर आपकी बैठक अधिक व्यवस्थित है।

धन्यवाद। हमारी बैठक अधिक सुन्दरता से व्यवस्थित तो है मगर इसका फर्नीचर इतना आधुनिक नहीं है, जितना कि श्री राजेन्द्र की बैठक का।

जी हां, मुझे उनका फर्नीचर पसन्द है और उनके यहां कुछ कलात्मक चित्र भी बड़ी सुन्दरता के साथ दीवारों पर लगे हुए हैं।

आप ठीक कहते हैं—वे सब चित्र काफ़ी सुन्दर हैं, परन्तु राजेन्द्रजी और उनकी पत्नी का चित्र मुझे बहुत पसन्द आया है। उसमें उनके बच्चे भी उनके साथ हैं।

यह चित्र एक प्रसिद्ध कलाकार ने बनाया था।

राजेन्द्रजी के घर में दो फूलदान मुझे बहुत अच्छे लगे हैं।

जी हां, फूलदान बड़े सुन्दर हैं। उनकी घड़ी भी बड़ी ख़ूबसूरत है।

परन्तु राजेन्द्रजी के घर में साज़ रखने के लिए अल्मारी नहीं है।

जी नहीं है, परन्तु श्रीमती राजेन्द्र को संगीत का बहुत शौक है।

संगीत के कौनसे साज़ आपको विशेष पसन्द हैं?

यूं तो भारत के सभी साज़ मुझे बहुत पसन्द हैं, परन्तु सितार विशेष रूप से अच्छा लगता है।

मुझे भी सितार विशेष पसन्द है। इस साज़ की मधुरता अनोखी है।

क्या आप हारमोनियम[2] बजाते हैं?

जी नहीं।

क्या आप कोई साज़ बजाते हैं?

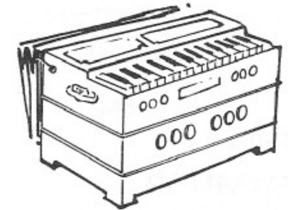
जी हां, मैं तबला[1] बजाता हूं।

और आपकी पत्नी?

मेरी पत्नी सितार[3] बहुत अच्छा बजाती है।



१. तबला बजाता हूं।



२. हारमोनियम



३. सितार बजाती है।



पाठ नौ : ९ :

नौवां : ९वां : पाठ

मिलने वाले

आज शनिवार है।
शाम का समय है।
दरवाज़े की घंटी बजी है।
हमारे पड़ोसी श्री और श्रीमती प्रकाश आये हैं।
नौकरानी दरवाज़ा खोलती है और उनको अन्दर
ले आती है।
फिर वह दरवाज़ा बन्द करती है और उनको बैठक में
ले जाती है।
हम उनका स्वागत करते हैं—उनसे नमस्ते करते हैं
और बैठने के लिए कहते हैं।
कुछ मिनट बाद दरवाज़े की घंटी फिर बजती है।

अब निर्मला आयी है। यह मेरी पत्नी की भतीजी है।
वह अभी-अभी गांव से आयी है।
वह शनिवार और रविवार को हमारे साथ रहेगी।
वह अपनी चाची को प्रणाम करती है।
उसकी चाची श्री और श्रीमती प्रकाश से उसका
परिचय कराती है।
वह उन्हें नमस्ते करती है।
अब हम सब बैठ जाते हैं।
स्त्रियां कपड़ों के नये-नये नमूनों के विषय में बातचीत
करती हैं।
हम पुरुष राजनीति, व्यापार और ताज़े समाचारों की
चर्चा करते हैं।
इसी समय नौकरानी चाय लाती है।
ट्रे में चायदानी[1], प्याले और तश्तरियां[2], दूधदानी[3] और
शक्करदानी है।
उसमें समोसे, जलेबी, गुलाब-जामुन, बर्फ़ी आदि
मिठाइयां[4] भी हैं।
मेरी पत्नी चाय प्यालों में डालती है।
मैं प्याले सबको देता हूं।
मेरी भतीजी निर्मला सबको मिठाई देती है।
हम सब आनन्द से चाय पीते हैं।
हम चन्द्र के बारे में बातचीत करते हैं।
चन्द्र मेरा भतीजा है।
वह अपने चाचा और चचेरे भाइयों के साथ
गांव में रहता है।
वह वहां आनन्द से है।





१. चायदानी



२. प्याला और तश्तरी



३. दूधदानी



४. मिठाई



४. मिठाई



पाठ दस : १० :

दसवां : १०वां : पाठ

शाम की चाय

नमस्ते, श्रीमती प्रकाश। कहिए आप कैसी हैं?
आपकी कृपा से अच्छी हूं।
आपका क्या हाल है प्रकाशजी?
मैं भी ठीक हूं।
बैठिए न।
क्षमा कीजिए, दरवाज़े पर कोई है, शायद मेरी
भतीजी आयी है।
...आओ, आओ निर्मला, अच्छा हुआ तुम आ गयीं।
देखो, और भी मेहमान हैं।
आप लोग शायद पहले एक-दूसरे से नहीं मिले।
मैं परिचय कराती हूं।
यह है मेरी भतीजी कुमारी निर्मला,
और ये हैं श्री और श्रीमती प्रकाश।



१. दरवाजा खोलना

नमस्ते।
नमस्ते। आपसे मिलकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई।
और, मुझे भी।
आइए, भीतर चलें, चाय तैयार है।
श्रीमती प्रकाश, आपको कैसी चाय पसन्द है
तेज़ या हल्की?
बहुत तेज़ नहीं।...और शक्कर, दो चम्मच।
मुझे अधिक मीठी चाय अच्छी लगती है, परन्तु
मेरे पति तो बिना शक्कर की चाय पसन्द करते हैं।
कहिए, प्रकाशजी, क्या समाचार है? व्यापार
कैसा चल रहा है?
अच्छा चल रहा है। कहिए, आपका क्या हाल है।
जी, मेरा व्यापार कुछ ठीक नहीं चल रहा,
बिगड़ता जा रहा है।
वास्तव में यह वर्ष तो बहुत ही ख़राब बीता है।
मुझे यह सुनकर बहुत दुःख है, आशा है कि शीघ्र ही
हालत सुधर जायेगी।
आशा तो ऐसी ही है। कहिए, आपका भतीजा
चन्द्र कैसा है?
चन्द्र ठीक है।
वह आजकल अपने चाचा रमेश और चचेरे भाइयों के
साथ गांव में रहता है।
वहां वह कब तक रहेगा?
कह नहीं सकता, परन्तु वह वहां आनन्द से है।



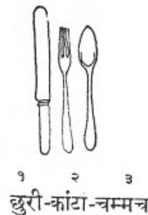
२. गांव



पाठ ग्यारह : ११ :
ग्यारहवां : ११वां : पाठ

भोजन-कक्ष

यह हमारा खाने का कमरा है।
कमरे के बीच में एक मेज है।
मेज के चारों ओर कुर्सियां रखी हैं।
मेज़ के ऊपर सफ़ेद मेज़पोश बिछा है।
उस के ऊपर पलेटें, चम्मच, छुरियां और कांटे
लगे हुए हैं।
पानी पीने के लिये गिलास भी रखे हैं।
मेज़ के बीच में नमक, काली मिर्च, सिरका व राई
छोटी बोतलों में रखे हैं।


१ २ ३
छुरी-कांटा-चम्मच

अचार और चटनी कटोरियों में हैं।
साइडबोर्ड के ऊपर एक तश्तरी में फल रखे हैं।
ऋतु के अनुसार इस में सेव, नाशपाती, केला, अंगूर,
आम, अनानास इत्यादि रखे रहते हैं।
यहां हम सुबह नाश्ता, दोपहर और रात को
भोजन करते हैं। शाम को चाय पीते हैं।
प्रायः लोग अपनी-अपनी रीति से भोजन करते हैं।
कुछ लोग धरती पर चटाई अथवा चौकी पर खाना
खाते हैं।
कुछ लोग प्लेटों की जगह धातु की थालियों और
कटोरियों में खाना खाते हैं।
अधिकतर लोग हाथ से खाना खाते हैं।
भारत में अनेक प्रकार की तरकारियां होती हैं—
जैसे आलु, गोभी, मटर, टमाटर, पालक, भिंडी,
शलजम, सलाद, ककड़ी, चुकन्दर आदि।
शाकाहारी घरों में तरकारी, दाल, दूध और दही का
सेवन किया जाता है।
मांसाहारी घरों में मछली, गोश्त, अण्डे भी खाये
जाते हैं।
दूध से बनी हुई और घी में तली हुई मिठाइयां
लोगों को प्रिय हैं।


४. सेव


५. नाशपाती


६. चाय


७. धरती पर चटाई अथवा
चौकी पर बैठना

८. धातु की थाली व कटोरियां

B



पाठ बारह : १२ :

बारहवां : १२वां : पाठ

खाने की मेज़ पर बातचीत

नमस्ते।
नमस्ते।
नमस्तेजी मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आप आज यहां आये हैं।
खाना तैयार है। चलिए, भोजन-कक्ष में चलें।
ठीक है। चलिये। तो इधर से आइये।
श्रीमती प्रभाकर, आप बायीं ओर वाली इस कुर्सी पर बैठिए।
और प्रभाकरजी, आप इधर आ जाइए।
आप बम्बई में कब से हैं?
थोड़े ही दिनोंसे हैं, पिछले सोमवार को आये थे।
और, हमें कल ही वापिस जाना है।
क्या आप बम्बई पहली बार आये हैं?



१. नमस्ते

मेरी पत्नी पहली बार यहां आयी है। मैं तो पहले भी कई बार आ चुका हूं।
मुझे व्यापार के सिलसिले में साल में कम-से कम एक बार तो आना ही पड़ता है।
बम्बई में मुझे अपनेपन का अनुभव होता है।
कहिए, श्रीमती प्रभाकर, आपको यह शहर पसन्द आया?
क्षमा कीजिए, मैं आपकी यह बात ठीक से सुन नहीं पायी।
मैंने अर्ज़ किया कि आपको यह शहर कैसा लगा?
मुझे तो यह शहर बहुत अच्छा लगा है। यहां घूमने और देखने के लिए बहुतसी जगहें हैं।
और, हमारे यहां का मौसम आपको कैसा लगा?
यहां का मौसम भी काफ़ी अच्छा है—न बहुत गर्मी, न बहुत सर्दी।
अरे, आपकी प्लेट तो खाली पड़ी है, थोड़ी तरकारी[2] और लीजिए।
बस, धन्यवाद।
श्रीमती प्रभाकर, आप तो लीजिए।
जी, दीजिए, थोड़ी-सी—बहुत स्वादिष्ट है।
चलिये आपको यह अच्छी लगी। धन्यवाद।
आप मीठी चीज़ कौन-सी पसन्द करेंगी—खीर, फिरनी या मिठाई[3]?
मुझे थोड़ी खीर[4] दे दीजिए।
और, प्रभाकरजी आप क्या लेंगे?
मुझे भी खीर ही दे दीजिए।



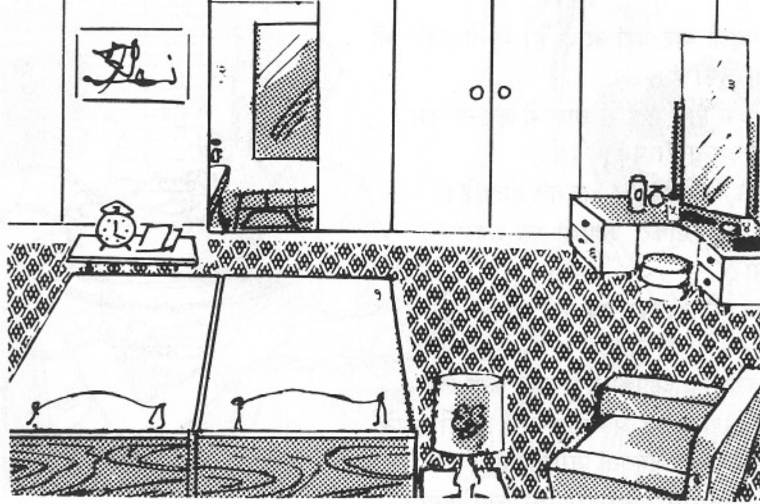
२. तरकारी



३. मिठाई



४. खीर



१. पलंग
२. गुसलखाना
३. ड्रेसिंग टेबल
४. कंघी और बालों के लिए ब्रश
५. हाथ का शीशा
६. दराज

पाठ तेरह : १३ :

तेरहवां : १३वां : पाठ

मेरा सोनेका कमरा

रात को जब मैं थक[१] जाता हूं तब मुझे नींद आने लगती है।
फिर मैं अपने सोने के कमरे में जाता हूं और कपड़े बदलता हूं।
मैं उस समय प्रायः कुरता और पायजामा पहनता हूँ।
सोने के समय ढीले और हल्के वस्त्र मुझे पसन्द हैं।
बिस्तर पर लेटकर मैं बत्ती बुझा देता हूं और सो जाता हूं।
कभी-कभी सोने के पहले कोई रोचक पुस्तक पढ़ता हूं।
मुझे रात भर प्रायः गहरी नींद आती है।



१. थक जाता हूँ

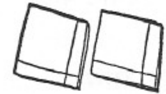
सवेरे ठीक छः बजे, घड़ी का अलार्म बजता है, और मैं जाग जाता हूं।
मैं बिस्तर से उठता हूं और चप्पल पहनकर ग़ुसलखाने जाता हूं।
ग़ुसलखाने में हाथ-मुंह धोता हूं और दांत साफ़ करता हूं।
फिर मैं स्वयं दाढ़ी बनाता हूं।
दाढ़ी बनाने का सामान[२] अल्मारी में रखा रहता है।
मेरे ग़ुसलखाने में गीज़र है, जिससे पानी गरम हो जाता है।
नहाकर मैं अपना शरीर तौलिए से पोंछता हूं और फिर कपड़े पहन लेता हूं।
ड्रेसिंग टेबल पर शीशा लगा है।
शीशे के सामने कंघा रखा है।
एक बोतल में तेल और एक छोटी शीशी में इत्र है।
एक डिब्बे में पाउडर भी रखा है।
यह सब चीजें मेरी नहीं हैं, मेरी पत्नी की हैं।
एक ओर अल्मारी में मेरे कपड़े हैं।
इस अल्मारी में मैं कुरते, कमीज़, कोट, पतलून, रूमाल,[४] मोजे,[५] धोती, टाई आदि रखता हूं।
मैले कपड़े अलग एक टोकरी में रखे जाते हैं।
धोबी[६] प्रायः सप्ताह में एक दिन आता है और मैले कपड़े ले जाता है।
कभी-कभी मैं अपने कपड़े लॉंड्री में भेजता हूं।



२. दाढ़ी बनाने का सामान



३. कुरता-पायजामा



४. रूमाल



६. धोबी



५. मौजे



पाठ चौदह : १४ :
चौदहवां : १४वां : पाठ

सुबह और शाम

आम तौर से आप कितने बजे सोकर उठते हैं?

मैं छः बजे सोकर उठता हूं।

इतनी जल्दी क्यों?

क्योंकि मुझे शहर पहुंचने के लिए सवेरे जल्दी गाड़ी पकड़नी होती है।



१. सोकर उठना

आप अपने कार्यालय कब जाते हैं?

लगभग नौ बजे।

क्या आप दिन-भर शहर में रहते हैं?

जी हां, प्रायः शाम के छः बजे तक रहता हूं।

कभी-कभी जल्दी लौट आता हूं।

साधारणतः आप शाम को क्या करते हैं?

प्रायः घर पर ही रहता हूं। सप्ताह में एक या दो बार हम लोग नाटक या फ़िल्म देखने जाते हैं। कल रात हम एक पिक्चर देखने गये थे, जो बहुत ही मनोरंजक थी।

यदि आज रात को किसी विशेष कार्य में व्यस्त न हों, तो मेरे साथ क्लब में चलिये। वहा आप की मुलाक़ात मेरे कई मित्रों से होगी।

मुझे आपके साथ जाने में प्रसन्नता होती, परन्तु आज मेरे पुत्र का जन्म-दिन है और मेरा सारा परिवार उसे मनाने के लिए मेरे घर-पर एकत्र हो रहा है।

यह तो बहुत अच्छा है। मेरी ओर से भी हार्दिक बधाई और मंगल कामनाएं।

बहुत-बहुत धन्यवाद। आप कहें, तो कल मैं आपके साथ चलूं।

जी हां, अवश्य चलिये। कल हम लोग आठ बजे नाटक देखने चलेंगे।

इधर ही आ जाइएगा, साथ-साथ चलेंगे।

यह ठीक है। अच्छा, अब आज्ञा दीजिए। कल मिलेंगे।



२. मेरे पुत्र का जन्म दिन है

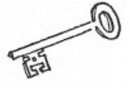


पाठ पन्द्रह : १५ :

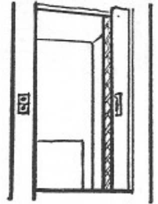
पन्द्रहवां : १५वां : पाठ

होटल

बम्बई में बहुत से अच्छे होटल हैं और किसी न किसी में स्थान अवश्य मिल जाता है।
फिर भी पहले से कमरा आरक्षित करा लेना अच्छा है।
प्रायः भारतीय होटल आधुनिक ढंग के हैं और बहुत आरामदेह हैं।
सब बड़े-बड़े शहरों के होटलों में आप 'सिंगल रूम' अथवा 'डबलरूम' आरक्षित करा सकते हैं, जिनके साथ विशेष गुसलखाना होता है।
इसके अतिरिक्त होटलों के कमरे 'वातानुकूलित' हैं, इसलिए बहुत गर्मी की ऋतु में भी इनमें आराम से रहा जा सकता है।
संसार के बड़े-बड़े शहरों के होटलों की तरह बम्बई में भी अच्छे होटल हैं।


१. चाभी

होटल के अन्दर जाते ही सबसे पहले बड़ा दालान होता है, जिसमें यात्री आते-जाते रहते हैं।
सबसे पहले आप स्वागत अधिकारी के पास जाते हैं और वहां से कमरे की चाभी[1] लेते हैं।
फिर एक पोर्टर आपको लिफ़्ट[2] द्वारा कमरे में ले जाता है।
होटल के अधिकारी बहुत विनम्र होते हैं और यदि आपको शहर के स्थानों का परिचय न हो तो वे आपकी सहायता करते हैं।
वे आपको दर्शनीय स्थानों की सूची देंगे।
ये कर्मचारी सिनेमा-घर अथवा नाट्य-गृह में आपके लिए जगह भी आरक्षित करा लेते हैं।
इन सब सुविधाओं के कारण आपका प्रवास सुखद हो जाता है।
नगर-दर्शन के लिए बसें, बिजली से चलनेवाली गाड़ियां और कारें पर्याप्त हैं। यात्रियों के लिए विशेष बसों और टैक्सियों का प्रबन्ध किया जा सकता है।
आवश्यकता पड़ने पर मार्गदर्शक और भाषान्तरकार भी आपको मिल सकते हैं।
होटल में आपको विदेशी मुद्रा के बदले भारतीय मुद्रा भी मिल सकती है।
अपने मित्रों को पत्र लिखने के लिए पोस्टकार्ड अथवा टिकट भी होटल से ले सकते हैं।
आप अपनी इच्छानुसार विदेशी समाचार पत्र[3] भी होटलों में प्राप्त कर सकते हैं। सच तो यह है कि भारतीय होटलों में आपको बहुत सुख मिलेगा और बहुत अच्छी सेवाएं प्राप्त होंगी।


२. लिफ़्ट



३. विदेशी समाचार पत्र



पाठ सोलह : १६ :

सोलहवां : १६वां : पाठ

होटल में कमरा बुक कराना

लीजिये होटल आ गया।

आप सामान[1] टैक्सी से उतरवाइये और टैक्सीवाले का हिसाब चुकाइये।

मैं तब तक स्वागत-कक्ष में जाकर कमरे का प्रबंध करता हूं और चाभी लाता हूं।

आप मुझे कहां मिलेंगे ?

वहां लॉबी में।

अच्छा, मैं वहां आपकी प्रतीक्षा करता हूं। अधिक देर मत लगाइएगा।

चिन्ता मत कीजिये। मैं जल्दी ही आने का प्रयत्न करूंगा।



१ सामान

कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूं ?

मुझे दो 'सिंगल रूम' चाहियें। अगर एक 'डबल रूम' मिल जाये, तो भी चलेगा।

हमारे यहां लगभग सभी कमरे भरे हैं, फिर भी मैं प्रयत्न करती हूं कि आपकी सेवा कर सकूं। आप यहां कब तक ठहरेंगे ?

मेरा ख्याल है हम कम-से-कम एक सप्ताह यहां ठहरेंगे। पन्द्रह दिन भी लग सकते हैं।

पहली मंज़िल पर 'डबल रूम[2]' आपको मिल सकेगा।

कमरे के साथ-साथ ग़ुसलख़ाना[3] भी है और इनके आसपास किसी प्रकार का शोरगुल नहीं होता।

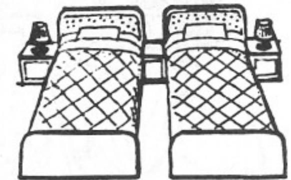
कमरे से बाहर का दृश्य सुन्दर है ?

जी हां, कमरे से बाहर की ओर समुद्र का दृश्य है। कमरे से आप 'गेट वे आफ़ इण्डिया' भी देख सकते हैं।

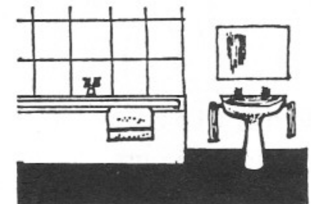
बहुत अच्छा। हम इस 'डबल रूम' में ठहरेंगे।

यह रही कमरे की चाभी। यह सेवक आपको आपके कमरे में ले जायेगा। आपका सामान मैं अभी पहुंचवाये देती हूं।

तब तक कृपया यह फ़ार्म भर दीजिये : —



२. डबल रूम



३. ग़ुसलख़ाना

नाम ....

पता ....

राष्ट्रीयता ....

व्यवसाय ....

जन्म-तिथि ....

आने की तिथि ....

हस्ताक्षर ....

बस ?

जी हां। बस इतना ही। धन्यवाद।



पाठ सत्रह : १७ :

सत्रहवां : १७वां : पाठ

रेस्टारेण्ट में

शहर में बहुत से रेस्टारेण्ट होते हैं।
बड़े होटलों में भी रेस्टारेण्ट होते हैं।
एक ऐसा ही रेस्टारेण्ट तस्वीर में है।
मेहमानों की टोलियां अपनी-अपनी मेज़ों पर बैठी हैं।

इस तस्वीर में आप देखते हैं कि कई पुरुष और स्त्रियां खाना खा रहे हैं।

एक वेटर मेज पर खाना लगा रहा है।

एक वेटर पानी के गिलास और जग लिए जा रहा है।

दायीं ओर के कोने में चार व्यक्तियों का एक परिवार विशेष भारतीय भोजन का आनंद ले रहा है।

पिता चिकन बिरियानी खा रहे हैं। यह बहुत स्वादिष्ट भोजन है जो चावल और मसालेदार चिकन से तैयार किया जाता है।

माता को चावल पसन्द नहीं है।

वे तन्दूरी रोटी और नरगिसी कोफ़्ता खा रही हैं।

तन्दूरी रोटी, नान अथवा पराठे भारतीय ढंग से बनी हुई नाना प्रकार की रोटियां हैं।

तन्दूरी चिकन भी बहुत स्वादिष्ट होता है। तन्दूर मिट्टी की बनी हुई एक बहुत बड़ी भट्ठी होती है।

भारतीय भोजन यूरोप के देशों से भिन्न होता है।

भारतीय भोजन[2] में अकसर मिर्च मसाला अधिक होता है।

भारत देश की विशालता के कारण यहां के भिन्न-भिन्न राज्यों के लोगों के भोजन की रुचियों में और पकाने के तरीकों में भिन्नता है।

इस लिए रेस्टारेण्ट के मालिकों को इनके स्वाद और रुचियों के अनुसार भोजन परोसने पड़ते हैं।

दक्षिण भारत के रेस्टारेण्ट प्रायः शाकाहारी भोजन[3] तैयार करते हैं।

इडली, सांभर, डोसा तथा उपमा आदि इनके विशेष भोजन हैं।

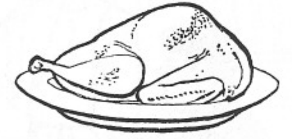
पश्चिम भारत के रेस्टारेण्टों में आप श्रीखण्ड, पूरी, भेल-पूरी और भजिया आदि का आनन्द ले सकते हैं।

उत्तर भारत के रेस्टारेण्टों के विशेष भोजन आलू-छोले[4], कबाब, पूरी-कचौड़ी आदि हैं।

दही से बना हुआ पेय 'लस्सी' बहुत लोकप्रिय है।

भोजन संबंधी रुचियों में भिन्नता होते हुए भी कुछ भोजन ऐसे हैं जो सारे देश में लोकप्रिय हैं।

इस लिए भारत के बड़े-बड़े शहरों में उपरोक्त प्रकार के रेस्टारेण्ट एक ही क्षेत्र में साथ-साथ मिल सकते हैं।



१. चिकन



२. भारतीय भोजन



३. शाकाहारी भोजन



४. आलू-छोले आदि



पाठ अठारह : १८ :

अठारहवां : १८वां : पाठ

भोजन के लिए आज्ञा देना

वेटर, क्या यह मेज़ ख़ाली है?

जी नहीं, यह दोनों मेजें अभी-अभी फ़ोन द्वारा सुरक्षित की गयी हैं, पर उस ओर की वह मेज़ ख़ाली है।

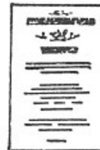
अच्छा, तो बताओ कौन-कौन से भोजन तैयार हैं?

जी यह लीजिये —'भोजन-[1]सूची', इसमें शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजनों की जानकारी दी गयी है।

खन्नाजी, आप अपनी पसन्द का भोजन चुन लीजिये।

आज मुझे भूख कम है। बहुत कम खाऊंगा।

वेटर, मेरे लिए एक 'चिकन रोस्ट' लाओ।



१. भोजन-सूची

क्षमा कीजिये, 'चिकन रोस्ट' नहीं बचा।

तो तन्दूरी मुर्ग लाओ।

आप तन्दूरी रोटी[2] पसन्द करेंगे या नान?

नान ठीक रहेगा।

शामी कबाब और मटन-कोफ़्ता[3] हमारे यहां के विशेष भोजन हैं।

सो बाद में देखेंगे।

हुज़ूर आपके लिए क्या लाऊं?

देखो, मेरे लिए आलू पनीर का सालन, बैंगन का भुरता और दही ले आओ। मुझे तन्दूरी रोटी या नान पसन्द नहीं, तवे की चपाती या फुल्का तैयार करवाओ।

बहुत अच्छा। आप कहें तो पराठा बनवा लाऊं। पालक का साग भी तैयार है।

नहीं, पराठा नहीं खाएंगे। साग भी नहीं चाहिये। अगर हरी मिर्च की चटनी हो तो लाना और एक गिलास लस्सी[4] भी।

खन्नाजी, क्या आप कुछ संगीत भी सुनेंगे?

ज़रूर, परन्तु संगीत के बारे में हमारी पसन्द में भिन्नता है। आप भारतीय संगीत[5] पसन्द करते हैं और मुझे पश्चिमी संगीत से लगाव है।

इससे क्या होता है? आप मेरे मेहमान हैं, इसलिए मुझे आपकी पसन्द का आदर करना चाहिए। वेटर हमें पश्चिमी संगीत का कोई रेकार्ड सुनवाओ।



२. तन्दूरी रोटी



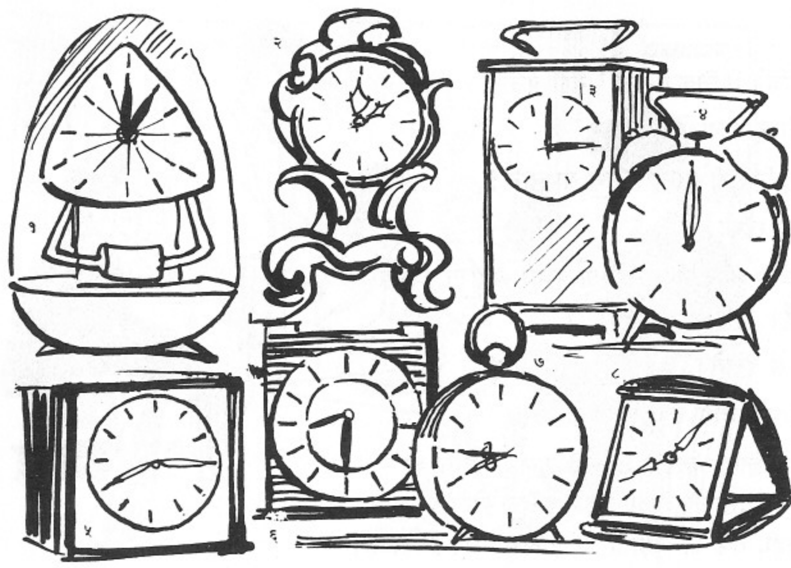
३. मटन कोफ़्ता



४. लस्सी



५. भारतीय संगीत



१. एक बजे
२. दो बजे
३. तीन बजे
४. बारह बजे
५. सवा आठ बजे
६. साढ़े आठ बजे
७. पौने नौ बजे
८. आठ बजके पांच मिनट

पाठ उन्नीस : १९ :

उन्नीसवां : १९वां : पाठ

अंक : समय और तारीख़

जब मैं समय मालूम करना चाहता हूं तो मैं अपनी घड़ी देखता हूं।
मेरे पास सोने की रिस्ट-वाच[१] है।
उसका पट्टा चमड़े का है।
यह घड़ी प्रायः ठीक समय बताती है, परन्तु कभी-कभी यह बिगड़ भी जाती है।
जब बिगड़ जाती है, तो मैं उसे घड़ीसाज के पास ले जाता हूं।
वह इसकी मरम्मत और सफाई करता है और इसे विनियमित करता है।
हिन्दी में समय बताने में आपको विशेष कठिनाई नहीं होगी।



१..रिस्ट वाच

आइए, सबसे पहले, घण्टों को लें।
हम कहते हैं, अब एक बजा, अब दो बजे हैं, अब तीन बजे हैं इत्यादि।
एक और आधे को मिलाकर डेढ़, दो और आधे को मिलाकर ढाई कहते हैं।
दो के बाद आधा जोड़कर बताने के लिए साढ़े शब्द का प्रयोग करते हैं, जैसे तीन और आधा साढ़े तीन, चार और आधा साढ़े चार इत्यादि।
बारह बजे का समय ठीक आधी रात या ठीक दोपहर का समय होता है।
किसी संख्या में चौथाई जोड़कर बताने के लिए, उसके साथ 'सवा' शब्द का प्रयोग करते हैं।
चौथाई कम करके बताने के लिए 'पौने' का।
अब सवा आठ बजे हैं, अब पौने नौ बजे हैं।
आठ बजे से लेकर नौ बजे तक का समय इस प्रकार बतलाया जायेगा :—
अब आठ बजकर पांच मिनिट हुए हैं।
अब आठ बजकर दस मिनिट[२] हुए हैं।
अब सवा आठ बजे हैं।
अब आठ बजकर बीस मिनिट[३] हुए हैं।
अब आठ बजकर पच्चीस मिनिट[४] हुए हैं।
अब साढ़े आठ बजे हैं।
अब नौ बजने में पच्चीस मिनिट[५] हैं।
अब नौ बजने में बीस मिनिट[६] हैं।
अब पौने नौ बजे हैं।
अब नौ बजने में दस मिनिट[७] हैं।
अब नौ बजने में पांच मिनिट[८] हैं।
अब नौ बजे हैं।
भारत में प्रायः दो कैलेण्डर चलते हैं—एक पुराना भारतीय और दूसरा रोमन।



२ आठ बज के दस मिनिट



३ आठ बज के बीस मिनिट



४ आठ बज के पच्चीस मिनिट



५ नौ बजने में पच्चीस मिनिट



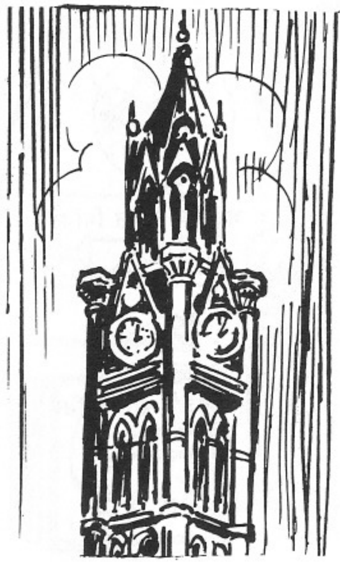
६ नौ बजने में बीस मिनिट



७ नौ बजने में दस मिनिट



८ नौ बजने में पांच मिनिट



जनवरी					
रविवार		४	११	१८	२५
सोमवार		५	१२	१९	२६
मंगलवार		६	१३	२०	२७
बुधवार		७	१४	२१	२८
गुरुवार	१	८	१५	२२	२९
शुक्रवार	२	९	१६	२३	३०
शनिवार	३	१०	१७	२४	३१

पाठ बीस : २० :

बीसवां : २०वां : पाठ

दिन और महीने
समय पूछना

क्या आप सप्ताह के दिनों के नाम जानते हैं?
जी हां, रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार,
गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार।
मान लीजिये कि आज बुधवार है, तो कल कौन-सा
दिन होगा?
गुरुवार।
और परसों?
शुक्रवार।
कल क्या दिन था?
मंगलवार।
और परसों?
सोमवार।
पिछले सोमवार को मेरा जन्म-दिन था।
अच्छा? फिर तो आपको बहुत-बहुत बधाई।

धन्यवाद। अब महीनों के नामों पर आइए—जनवरी,
फ़रवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त,
सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर और दिसम्बर।
ये तो हुए रोमन कैलेण्डर के अनुसार महीनों के नाम।
अब महीनों के नाम भारतीय कैलेण्डर के अनुसार
बताइए।
सुनिये—चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण,
भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष,
माघ और फाल्गुन।
क्या आप इन दोनों कैलेण्डरों के अनुसार महात्मा
गांधी की जन्मतिथि व मृत्यु-तिथि बता सकते हैं?
जी हां, रोमन कैलेण्डर के अनुसार महात्मा गांधी का
जन्म दो अक्तूबर अठारह सौ उनहतर को हुआ था
और उन की मृत्यु तीस जनवरी उन्नीस सौ अड़तालीस
को हुई। भारतीय कैलेण्डर के अनुसार महात्मा गांधी
का जन्म बारह भाद्रपद, १७९० को हुआ था और
उनकी मृत्यु ५ पौष, १८६९ को हुई।
अच्छा, क्या आप मुझे ठीक समय बता सकते हैं?
जी हां, मेरी घड़ी के अनुसार इस समय दो बजकर
पांच मिनिट हुए हैं, पर इसके पूर्ण ठीक होने पर
विश्वास नहीं किया जा सकता, क्योंकि मेरी घड़ी कभी
तेज़ हो जाती है और कभी धीमी।



महात्मा गांधी
जन्म: २ अक्तूबर, १८६९
मृत्यु: ३० जनवरी, १९४८



पाठ इक्कीस : २१ :

इक्कीसवां : २१वां : पाठ

भारतीय मुद्रा

अब आपके लिए भारतीय मुद्रा का ज्ञान आवश्यक है।
भारत में दशमलव-पद्धति प्रचलित है।
यह मुद्रा-पद्धति वैज्ञानिक और सरल है।
देखिये, हिसाब करना कितना आसान है।
भारत का प्रधान सिक्का रुपया है।
रुपया सौ इकाइयों में बंटा हुआ है।
हरेक इकाई को पैसा कहते हैं।
पैसा का बहुवचन पैसे है।
सौ पैसे मिलने से एक रुपया होता है।
एक पैसा, दो पैसे, पांच पैसे, दस पैसे, पच्चीस पैसे
और पचास पैसे के सिक्के प्रचलित हैं।
एक रुपये के सिक्के बड़ी संख्या में नहीं हैं।
साधारण रूप से रुपये के कागज के नोट ज़्यादा
प्रचलित हैं।



१. एक पैसा



२. दो पैसे



३. दस रुपये का नोट

दो रुपये का नोट भी काफ़ी चलता है।
बड़ी रकमों के लिए पांच रुपये दस रुपये और
बीस रुपये के नोट हैं।
सौ रुपये और हज़ार रुपये के नोट भी हैं।
सोने के सिक्कों का चलन नहीं है।
यदि आप दस पैसे की कोई चीज खरीदें और पच्चीस
पैसे का सिक्का दुकानदार को दें, तो वह आपको
पन्द्रह पैसे के सिक्के लौटायेगा।
यदि डाकखाने से पन्द्रह पैसे का टिकट लेना हो तो
आप क्लर्क को दस पैसे का एक सिक्का और पांच पैसे
का एक सिक्का दीजिये अथवा पांच पैसे के तीन
सिक्के दीजिये।
यदि आपको मुद्रा बदलनी हो तो आप बैंक से अथवा
होटल से बदल सकते हैं।
विदेशी यात्रियों को भारत पहुंचते ही भारतीय मुद्रा की
आवश्यकता होती है।
इसलिए हवाई अड्डे पर ही मुद्रा बदलने का प्रबन्ध
होता है।
समुद्री मार्ग से आनेवाले यात्रियों की सुविधा के लिए
जहाज़ में ही मुद्रा बदलने का प्रबन्ध है।
तात्पर्य यह है कि एक रुपये में—
पांच पैसे के बीस सिक्के होते हैं।
या दस पैसे के दस सिक्के होते हैं।
या पच्चीस पैसे के चार सिक्के होते हैं।
या पचास पैसे के दो सिक्के होते हैं।



४. दस पैसे



५. पांच पैसे



६. पच्चीस पैसे



पाठ बाईस : २२ :
बाईसवां : २२वां : पाठ

बैंक में

मुझे कुछ विदेशी-मुद्रा के बदले में भारतीय मुद्रा चाहिए।

जी कहिए, कौनसे देश की मुद्रा बदलना चाहते हैं?

मेरे पास कुछ फ्रैंक, कुछ डॉलर, कुछ रूबल और थोड़ेसे पौण्ड हैं। कृपया गिन लीजिए।

इस समय की विनिमय-दर के अनुसार आपको ५४० रुपये ३० पैसे मिलेंगे। और आपको कौन से नोट चाहिएँ?

मुझे सौ-सौ रुपये के पांच और दस-दस रुपये के चार नोट दे दीजिये और बाकी रकम की रेजगारी दे दीजिये।

बहुत अच्छा। ये लीजिये सौ-सौ के पांच नोट—ये हुए पांच सौ रुपये, दस-दस के चार नोट—ये हुए चालीस रुपये और ये लीजिये ३० पैसे।

धन्यवाद।

कृपया देख लीजिये—हो गये न, पांच सौ चालीस रुपये और तीस पैसे।

मैं यहां एक खाता भी खोलना चाहता हूं।

इसके लिए तो आपको खिड़की नम्बर पांच पर जाना होगा।



१. नोट गिनना

नमस्ते। मैं आपके बैंक में अपना खाता खोलना चाहता हूं।

आप कैसा खाता खोलना चाहते हैं—करेण्ट या सेविंग्स?

करेण्ट।

करेण्ट खाता खोलने के लिए आपको परिचय-पत्र देना पड़ेगा।

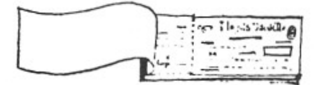
जी हां, यह मुझे मालूम है। यह रहा परिचय-पत्र।

यह ठीक है। धन्यवाद।

कृपया आप यह फ़ार्म भर दीजिए।

जितना रुपया जमा कराना चाहते हों, उतनी रकम, इस फ़ार्म के साथ उस काउण्टर पर दे दीजिये।

वहां से आपको चेक-बुक[२] मिलेगी।



२. चैक-बुक

धन्यवाद।

मेरा...करेण्ट एकाउण्ट...खोल दीजिये। यह लीजिये फ़ार्म और पांच सौ रुपये।

बहुत अच्छा। इस कार्ड पर इस प्रकार से हस्ताक्षर कीजिये जैसे आप हमेशा अपने चेकों पर करेंगे।

ये रहे मेरे हस्ताक्षर।

आप थोड़ा समय रुकिये, मैं अभी आपको चेक-बुक देता हूं।



पाठ तेईस : २३ :

तेईसवां : २३वां : पाठ

डाकघर

शहरों और कस्बों में डाकघर होते हैं।

लगभग हर गांव में भी आपको डाकघर मिल जायेगा।

अगर आप पत्र सामान्य डाक द्वारा भेजना चाहते हैं; तो आपको डाकघर जाने की भी ज़रूरत नहीं।

आप उसे निकट के लेटर-बाक्स[1] में डाल दीजिये। लेटर-बाक्स पहचानना बहुत सरल है। ये लाल रंग के होते हैं और डाकघर के बाहर, सड़कों के किनारे या गलियों में सुविधाजनक स्थानों पर रखे जाते हैं।

हां, अगर आप चाहते हैं कि आपका पत्र या पार्सल[2], जिसके नाम भेजा जा रहा है, केवल उसी को मिले, तो उसे डाकघर में जाकर देना पड़ेगा और कुछ अतिरिक्त टिकट लगा कर रजिस्टर कराना पड़ेगा।



१. लेटर बाक्स



२. पार्सल

आप पत्र या पार्सल का बीमा भी करा सकते हैं।

इस हालत में आपको कुछ और पैसे देने पड़ेंगे।

पर उसके पहुंचने की पूरी-पूरी ज़िम्मेदारी डाकघर पर होगी और किसी प्रकार की हानि होने पर डाक का महकमा आपके नुकसान को पूरा करने के लिए ज़िम्मेदार होगा।

अगर आप तार भेजना चाहते हैं, तो आपको निकट के तारघर में जाना पड़ेगा। कई डाकघरों में तार भी स्वीकार किये जाते हैं।

टेलीफ़ोन द्वारा भी तार दिया जा सकता है।

लेटर-बाक्स दिन में कई बार ख़ाली किये जाते हैं।

जिन पत्रों पर 'तुरंत वितरण' के अतिरिक्त टिकट लगे रहते हैं, उन्हें एक विशेष डाकिया[3] तार की तरह जल्दी से जल्दी निर्धारित पते पर पहुंचाता है।

इस चित्र में आपको डाकघर के अन्दर का दृश्य दिखायी दे रहा है।

काउण्टर के भीतरी भाग में डाकघर के कर्मचारी बैठे हैं।

दूसरी ओर डाकघर की सेवाओं से लाभ उठानेवाले लोग हैं। इनमें से एक टिकट ख़रीद रहा है, दूसरा पत्र रजिस्ट्री[4] करवा रहा है और तीसरा तार लिख रहा है।

आपको हर काम के लिए सही खिड़की पर जाना चाहिए।

इस तरह आपका समय बर्बाद नहीं होगा।

कौन-सी खिड़की किस काम के लिए है, यह उसी पर लिखा रहता है।

यदि आप कोई पार्सल भेजना चाहते हों तो यह कर्मचारी को दीजिये।

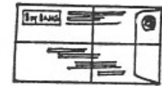
वह पहले उसे कांटे पर तोलेगा और वजन के अनुसार उचित मूल्य के टिकट चिपकाने के लिए कहेगा।

प्रायः डाकघरों, रेस्टारेण्टों, दवाफ़रोशों व कई अन्य दुकानों पर सार्वजनिक टेलिफ़ोन के डिब्बे[5] लगे रहते हैं।

आप इन स्थानों से फ़ोन कर सकते हैं।



३. डाकिया



४. रजिस्टरी



५. सार्वजनिक टेलिफ़ोन का डिब्बा



पाठ चौबीस : २४ :
चौबीसवां : २४वां : पाठ

डाकघर में

क्या आप मुझे नज़दीकी डाकघर जाने का रास्ता बता सकते हैं?

जी हां। सामने की बड़ी सड़क पर है। मैं भी उसी तरफ़ जा रहा हूं। आप मेरे साथ आइये। मैं आपको बता देता हूं।

मैं आपका बड़ा आभारी हूं।

वह रहा डाकघर। गुंबदवाली लाल इमारत में जाइये।
धन्यवाद।

मुझे एक तार भेजना है, फ़ार्म कहां से मिलेगा?

यह लीजिये तार का फ़ार्म[1]।

क्या यह तार आज शाम तक दिल्ली पहुंच जायेगा?

जी हां। लेकिन, अगर आप चाहते हैं
कि बहुत जल्दी पहुंचे तो 'एक्सप्रेस' तार दे दीजिए।

तो इसे 'एक्सप्रेस' कर दीजिए।

क्या मैं यहां से अपने मित्र के साथ कलकत्ता फ़ोनपर बात कर सकता हूं?

जी हां। आप कलकत्ते का नम्बर और अपने मित्र का नाम लिखा दीजिये। तीन मिनट बात करने के लिए पैसे भी जमा करवा दीजिये। कलकत्ते की लाइन मिलते ही आप बात कर लीजियेगा।

मुझे कुछ टिकट भी ख़रीदने हैं। कहां से मिलेंगे?
जी, आप अगले काउण्टर पर जाइये।

मुझे पन्द्रह पैसे वाले दस टिकट,[2] पांच लिफ़ाफ़े, पन्द्रह अन्तर्देशीय पत्र और तीन पोस्ट कार्ड[3] दीजिये।

जी, ये लीजिये टिकट और ये रहे लिफ़ाफ़े, अन्तर्देशीय पत्र और पोस्टकार्ड। ये हैं आप के बाक़ी पैसे।

धन्यवाद।

१. तार का फ़ार्म



२. टिकट

३. पोस्टकार्ड



पाठ पच्चीस : २५ :

पच्चीसवां : २५वां : पाठ

यात्रा

मनोविनोद के लिए तथा व्यापार के लिए यात्रा के साधन अनेक हैं।



१. बाइसिकिल

भारत के लाखों लोग बाइसिकिल[1] का उपयोग करते हैं।
कई लोगों के पास मोटर साइकिलें[2] हैं, जो यात्रा का तीव्र और सरल साधन है।
मोटरकार द्वारा यात्रा आराम से की जा सकती है।
फिर भी हम अधिकतर रेलगाड़ियों द्वारा यात्रा करते हैं।
रेल्वे स्टेशन के इस चित्र को देखिये।
एक रेलगाड़ी प्लेटफ़ार्म पर खड़ी है।



२. मोटरसाइकिल

इसका छूटने का समय है।
कुछ यात्री अन्दर बैठे हैं और कुछ खिड़कियों से उन यात्रियों को देख रहे हैं जो देर करके पहुंचे हैं।
ये मुसाफिर खाली जगहों की खोज में फिर रहे हैं।
गाड़ी का इंजिन अब चलने ही वाला है।
दूसरे प्लेटफ़ार्म पर एक गाड़ी अभी-अभी आकर रुकी है।
कुछ लोग गाड़ी से उतर[3] रहे हैं।



३. गाड़ी से उतरना

यात्रा करने से पहले सीट आरक्षित करवा लेनी चाहिए।
वरना टिकट की खिड़की पर लम्बी कतारों में खड़े रहना पड़ता है और बहुधा टिकट न मिलने के कारण निराश होना पड़ता है।
किताबों की दुकानों पर कुछ लोग यात्रा में पढ़ने के लिए किताबें, पत्रिकाएं तथा समाचार-पत्र चुन रहे हैं।
कुछ लोग क्लोक-रूम[4] में सामान रख रहे है या वहां से सामान निकाल रहे हैं।
इससे आगे उपाहार-गृह है, जहां लोग जल्दी-जल्दी भोजन कर रहे हैं।
कुछ लोग प्रतीक्षालय[5] में अपना अवकाश बिता रहे हैं।



४. क्लोक-रूम

देश के चारों ओर नदियों का जाल बिछा हुआ है और नदियों द्वारा यातायात भी आम है।
अन्तरराष्ट्रीय यातायात के लिए बड़े जहाज़ चलते हैं।
भारत के कुछ बन्दरगाह बहुत ख़ूबसूरत हैं और जहाज़ संसार भर से माल असबाब और यात्रियों को लाते हैं तथा ले जाते हैं।
हवाई यात्रा का साधन भी बहुत प्रगति कर चुका है।
व्यापारी तथा बड़े-बड़े सरकारी कर्मचारी प्रायः हवाई जहाज़ से सफर करते हैं क्योंकि हवाई यात्रा का साधन ही वेगपूर्ण हैं।



५. प्रतीक्षालय



पाठ छब्बीस : २६ :
छब्बीसवां : २६वां : पाठ

रेल्वे स्टेशन पर

कुली, मेरा सामान उठाओ[१]।

कहां ले जाना है साहब?

मैं आठ बजे की गाड़ी से हावड़ा जा रहा हूं।

मेरे पास पहले दर्जे का टिकट है।

और मैंने अपनी जगह पहले से सुरक्षित करा रखी है।

आपके पास सामान ज़्यादा मालूम देता है।

यह तीन बड़ी पेटियां सामान के डिब्बे में जानी चाहियें।

अच्छा तो मैं इनका वजन करवाकर लेबल लगवा लेता हूं।

तुम तब तक मेरे सूटकेस और बिस्तर का ध्यान रखो जो मैं साथ ले जा रहा हूं।



१. कुली सामान उठाओ

हावड़ा की गाड़ी नौ नम्बर के प्लेटफार्म से छूटेगी।

मैं वहां आपका इंतज़ार करूंगा।

आइये साहब, यह रहा आपका कम्पार्टमेण्ट और यह रही आपकी सीट। मैंने आपका सूटकेस और बिस्तर[२] ऊपर की सीट पर रख दिया है।



२. सूटकेस और बिस्तरा

हम हावड़ा कब पहुंचेंगे?

परसों सुबह नौ बजे।

यह लो तुम्हारी मज़दूरी।

यह क्या साहब? इतना कम? एक रुपया और दीजिए?

अच्छा यह लो।

साहब, कुछ उपन्यास या जासूसी कहानियों की पुस्तकें लेंगे?

ज़रा देखूं तो तुम्हारे पास कौन-कौन सी पुस्तकें हैं।

यह देखिये।...पेपर बैक[३]...पुस्तकों का तो मेरे पास भण्डार है।

मैं ये दो किताबें ख़रीदना चाहता हूं। क्या दाम हैं इनके?

ये दोनों पांच रुपये दस पैसे की हैं।

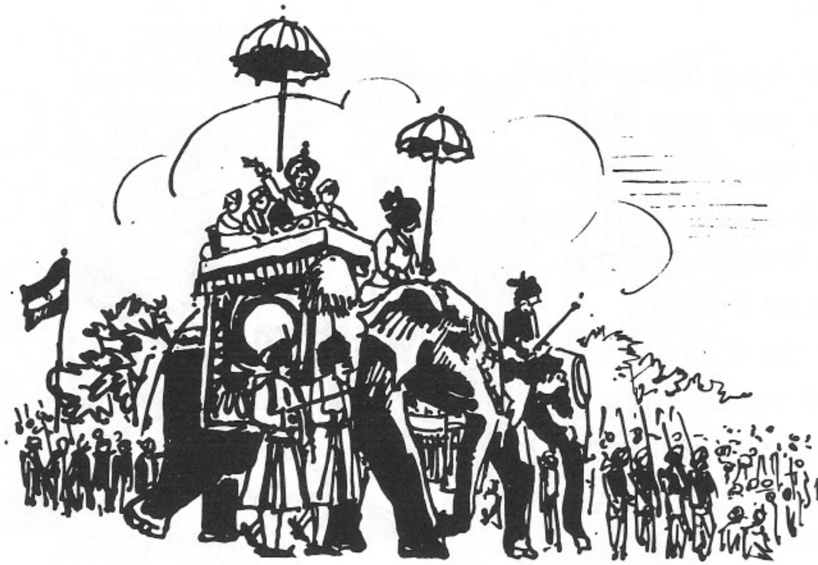
वह हिन्दी पुस्तक दिखाइये।

यह लीजिये प्रेमचन्द लिखित 'गो-दान'।

यह भी दे दीजिये। प्रेमचन्द मेरे प्रिय लेखक हैं।



३. पेपर बैक



'परेड' गणतंत्र दिवस

पाठ सताईस : २७ :

सताईसवां : २७वां : पाठ

भारत



भारत में कई राज्य हैं।
उत्तर में जम्मू और कश्मीर,[१] हरयाना,[२] पंजाब,[३]
उत्तर प्रदेश,[४] राजस्थान[५] और हिमाचल प्रदेश[६] हैं।
दक्षिण में आन्ध्र,[७] केरल,[८] तामिलनाडु[९] और कर्नाटक हैं।
बंगाल,[१०] आसाम,[११] बिहार और उड़ीसा पूर्व में हैं।
पश्चिम में गुजरात और महाराष्ट्र हैं।
मध्यप्रदेश भारत के मध्य भाग में है।
इनके अतिरिक्त और भी छोटे-छोटे राज्य जैसे
मेघालय इत्यादि हैं।
देश के एक कोने से दूसरे कोने में जाने के लिए रेलों
और सड़कों का जाल बिछा हुआ है।

हवाई यात्रा के साधन भी महत्वपूर्ण प्रगति पा
चुके हैं।
इस देश में कई भाषाएं बोली जाती हैं और अनेक
बोलियां भी प्रचलित हैं।
ये भाषाएं बोलचाल और साहित्य की दृष्टि से
प्रगतिशील हैं।
भारत में बड़ी-बड़ी नदियां तथा पर्वतमालाएं हैं।
गंगा, ब्रह्मपुत्र, गोदावरी, कावेरी, नर्मदा और ताप्ती
यहां की बड़ी नदियों में से हैं।
उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल की
पर्वतमालाएं हैं।
भारत एक गणतन्त्र राज्य है।
यहां की सरकार यहां की जनता द्वारा चुनी जाती है।
हरेक बालिग नागरिक मत देने का अधिकारी है।
देश का एक लिखित संविधान है।
इसके द्वारा नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकार
प्राप्त हैं।
भारत का राष्ट्र-ध्वज तिरंगा है।
इस में तीन रंग हैं—ऊपर केसरी, बीच में सफ़ेद
और नीचे हरा।
सफ़ेद पट्टी के बीच गहरे नीले रंग का चक्र है।
कवि रविन्द्रनाथ टैगोर[१२] द्वारा रचित 'जन मन गण'
गीत, २६ जनवरी १९५० को भारत के राष्ट्रीय गीत के
रूप में स्वीकृत किया गया था।











१२. कवि रविन्द्रनाथ टैगोर



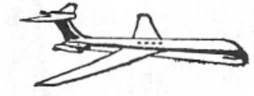
पाठ अट्ठाईस : २८ :

अट्ठाईसवां : २८वां : पाठ

बम्बई से कलकत्ते की यात्रा

मुझे "टूरिस्ट आफिस" अथवा पर्यटन कार्यालय जाने का रास्ता बताने की कृपा कीजिये।
आप इस सड़क पर सीधे फ़्लोरा फ़ाउण्टेन जायें। वहां से दायीं ओर वीर नरिमान रोड द्वारा चर्चगेट रेल्वे स्टेशन पहुंच जायें। वहां स्टेशन के सामने "टूरिस्ट आफ़िस" है।
शुक्रिया।
नमस्ते। मुझे कुछ सूचना प्राप्त करनी है।
आप पूछताछ के काउण्टर पर उस महिला से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
नमस्ते। मुझे कलकत्ता जाना है। क्या आप बतला सकेंगी कि मुझे कैसे जाना चाहिए?
जी, यह तो आपके समय पर निर्भर है।

यदि आप शीघ्र कलकत्ता जाना चाहें, तो आपको किसी हवाई यात्रा की कम्पनी के कार्यालय से हवाई यात्रा का टिकट खरीदना चाहिए।
सुबह और शाम को हवाई जहाज[1] छूटते हैं।
आप सवा दो घण्टे में कलकत्ता पहुंच जायेंगे।
यह अच्छा सुझाव है। परन्तु, मुझे इतनी जल्दी नहीं है। मुझे रास्ते में दर्शनीय स्थानों को देखने की इच्छा है।
तब तो आपको रेलगाड़ी द्वारा जाना चाहिए।
कलकत्ता यहां से २००० किलोमीटर दूर है और यहां से ३६ घण्टे की यात्रा है।
रास्ते में यात्रा स्थगित करने से आप कुछ दर्शनीय स्थान देख सकते हैं।
क्या मैं समुद्री जहाज[2] द्वारा भी यात्रा कर सकता हूं?
जी हां। यह यात्रा बहुत लम्बी पड़ेगी।
परन्तु बहुत आनन्दप्रद होगी।
समुद्री जहाज महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तामिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश के राज्यों के साथ साथ चलते हैं और फिर बंगाल की खाड़ी से होकर सीधे कलकत्ते जाते हैं।
यह तो लगभग पूरे दक्षिणी भारत[3] की यात्रा हो गयी।
ठीक कहा आपने, परन्तु अपनी कार[4] द्वारा जाना सबसे उत्तम होगा। कार द्वारा जाने से आपका समय स्वयं आपके हाथ में रहता है और कलकत्ता पहुंचने से पहले आप काफ़ी सैर कर सकेंगे।
धन्यवाद। यदि ये सूचनाएं पत्रिका के रूप में मिलती हों, तो देने की कृपा करें।
अवश्य, आपको सूचना-पत्र सामने के काउण्टर पर मिल सकेगा।
धन्यवाद।

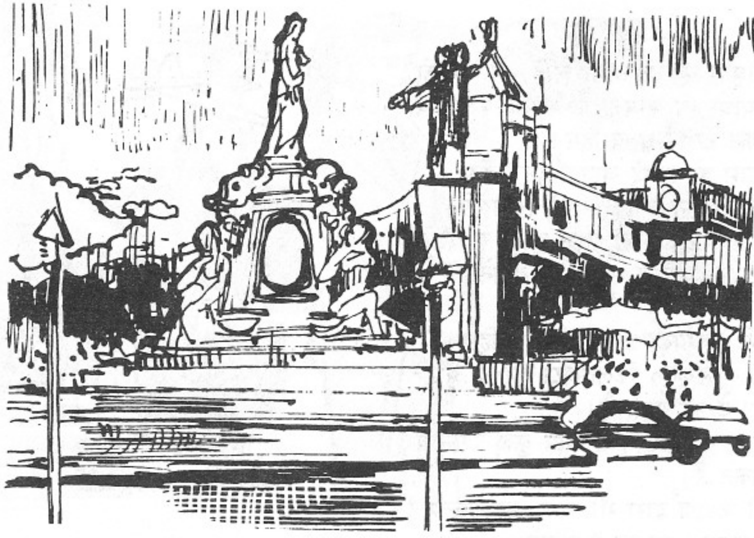

१. हवाई जहाज


२. समुद्री जहाज



३. दक्षिण भारत


४. कार



पाठ उन्तीस : २९ :

उन्तीसवां : २९वां : पाठ

बम्बई का एक महत्त्वपूर्ण स्थल

हम इस समय बम्बई के फ़्लोरा फ़ाउण्टेन के पास खड़े हैं।

यह बम्बई का एक महत्वपूर्ण स्थल है।

यहां से बोरीबन्दर की ओर जाने के लिए यह रास्ता है।

इसे दादाभाई नवरोजी मार्ग कहते हैं।

कोलाबा की ओर महात्मा गांधी मार्ग से जाते हैं।

चर्चगेट स्टेशन जाने के लिए हमें एक भूमिगत मार्ग से जाना पड़ता है।

गेटवे आफ़ इण्डिया यहां से पास ही है और वहां से आपको एलिफ़ैण्टा गुफ़ाओं के लिए नाव मिल सकती है।

दादा भाई नवरोजी मार्ग के दोनों ओर ऊंची-ऊंची इमारतें[1] हैं।

नीचे की मंज़िल में दुकानें, बैंक और उपाहार-गृह हैं।

रास्ते पर कारों, टैक्सियों, बसों और लारियों की भीड़ रहती है।

फ़ुट-पाथ पर आने-जानेवालों की बहुत भीड़ रहती है।

इसलिए यहां सड़क को पार करना ख़तरे से ख़ाली नहीं है।

केवल सड़क पार करने की चिह्नित जगहों से सड़क पार करनी चाहिए।

दूसरे स्थानों पर जब तक पुलिस का सिपाही[2] या यातायात की लाल बत्ती[3] गाड़ियों को रोक न दे, सड़क को पार नहीं करना चाहिए। सड़क को पार करने के पहले बहुत सावधानी से दायीं ओर देखिये और जब आप सड़क के बीच में पहुंच जायें, तो बायीं ओर देखिये।

रात को ये मार्ग बिजली के प्रकाश से जगमगा उठते हैं। कई मार्गों पर गैस से रोशनी की जाती है।

विज्ञापक बत्तियां और विज्ञापित वस्तुओं से सजी शीशे की जगमगाती अल्मारियां और खिड़कियां इस प्रकाश को और बढ़ा देती हैं।

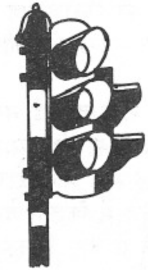
इस जगह रात को भी दिन-का सा प्रकाश रहता है।



१. उंची-उंची इमारते



२. पुलिस का सिपाही



३. यातायात की बत्ती

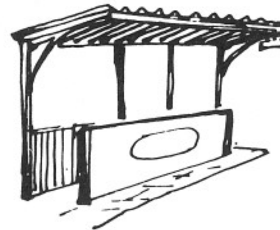


पाठ तीस : ३० :

तीसवां : ३०वां : पाठ

रास्ता पूछना

यह कौनसी जगह है?
इस स्थल को फिरोजशाह मेहता रोड कहते हैं।
कृपया मुझे मुहम्मद अली रोड जाने का रास्ता बतला दीजिये।
आप यहां से दादाभाई नवरोजी मार्ग से होते हुए महानगरपालिका की इमारत तक जायें। वहां से थोड़ी दूर पर मुहम्मद अली रोड है।
वहां पहुंचने में कितनी देर लगेगी?
पैदल जाने में बीस मिनट लगेंगे।
बस आपको पांच मिनट में पहुंचा देगी।
बस कहां से मिलेगी?
यदि आप बस से जाना चाहें, तो सामने के बसस्टाप[1] पर चले जाइये।
सड़क के उस पार चला जाऊं?



१. बस-स्टॉप

जी हां। सावधान रहिये कहीं ऐसी बस[2] में मत चढ़ जाइये जो वहां न जाती हो। वैसे तो बाइकला जानेवाली सब बसें मुहम्मद अली रोड से होकर जाती हैं। फिर भी चढ़ने से पहले कण्डक्टर से पूछ लीजिएगा और कण्डक्टर से यह भी कहिये कि आपको मुहम्मद अली रोड पर उतार दे।
धन्यवाद।
कण्डक्टर[3]! क्या यह बस मुहम्मद अली रोड जाती है?
जी हां, आइये। जल्दी कीजिये।
ऊपर मत जाइये, वहां कोई जगह ख़ाली नहीं है।
नीचे उस ओर कोने की सीट ख़ाली है।
बहुत अच्छा, धन्यवाद।
बस के अन्दर सिगरेट पीना मना है।
क्षमा करें, यह मुझे मालूम नहीं था। लीजिये बुझा देता हूं।
मुहम्मद अली रोड का एक टिकट दे दीजिये।
यह लीजिये एक रुपये का नोट।
यह रहा टिकट और ये रहे बाकी पैसे।
मुहम्मद अली रोड आये, तो कृपया बता दीजिएगा।
चिन्ता मत कीजिये, मैं आपको वहीं उतार दूंगा।
धन्यवाद।
इस स्टाप पर आपको उतरना है, ध्यान से उतर जाइये।
बड़ी मेहरबानी की आपने।
मुझे कुछ चीनी के बर्तन ख़रीदने हैं। क्या मुझे चीनी के बर्तन बेचनेवालों की दुकानों का रास्ता बता सकेंगे?
जी हां, आप यहां से सड़क पार करें और अपने दाएं हाथ के फ़ुटपाथ पर चलते जायें। लगभग सौ गज़ के फ़ासले पर चीनी के बर्तनों की दुकानें हैं।
और परदों के लिए कपड़ा कहां से मिलेगा?
उसके लिए आप मंगलदास मार्केट जायें। इस गली से होकर आप अब्दुल रहमान स्ट्रीट जायें और वहां से दायें हाथ की ओर चलते जायें जब तक कि आप मंगलदास मार्केट न पहुंच जायें।
क्या बहुत दूर है?
अजी नहीं। केवल दस मिनट का रास्ता है।
बहुत अच्छा। धन्यवाद। मैं पहले कपड़ा ख़रीद लेता हूं, बाद में चीनी के बर्तन[4] लूंगा।



२. बस



३. कण्डक्टर



४. चीनी के बर्तन



पाठ इकत्तीस : ३१ :

इकत्तीसवां : ३१वां : पाठ

दिल्ली दर्शन।

अगर आप दिल्ली में थोड़े ही दिनों के लिए ठहर रहे हों तो पहले से ही अपना कार्यक्रम अपनी रुचि के अनुसार निश्चित कर लीजिए। हो सकता है कि आप को चीजें खरीदने का शौक हो या शायद ऐतिहासिक और अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल, भवन और स्मारक देखने की इच्छा हो। इस लिए आप अपना कार्यक्रम ऐसा बनाएं कि खरीदारी के साथ-साथ दिल्ली की सैर भी हो जाए।



१. खरीदारी

दिल्ली के दो हिस्से हैं:—एक नई दिल्ली और दूसरा पुरानी दिल्ली। दोनों के अलग-अलग रेलवे स्टेशन हैं। नई दिल्ली के पास पालम में हवाई अड्डा है। अगर आप ट्रेन से पुरानी दिल्ली आयें तो स्टेशन के पास ही आपको लाल किला दिखाई पड़ेगा। उस के सामने से सड़क पुरानी दिल्ली के मुख्य बाज़ार चांदनी चौक को जाती है। उस के पास ही जामा मस्जिद है।

नई दिल्ली का मुख्य बाज़ार कनॉट प्लेस है जिस के आस पास की दुकानों में आधुनिक और प्राचीन—दोनों तरह की चीजें मिल जाती हैं।



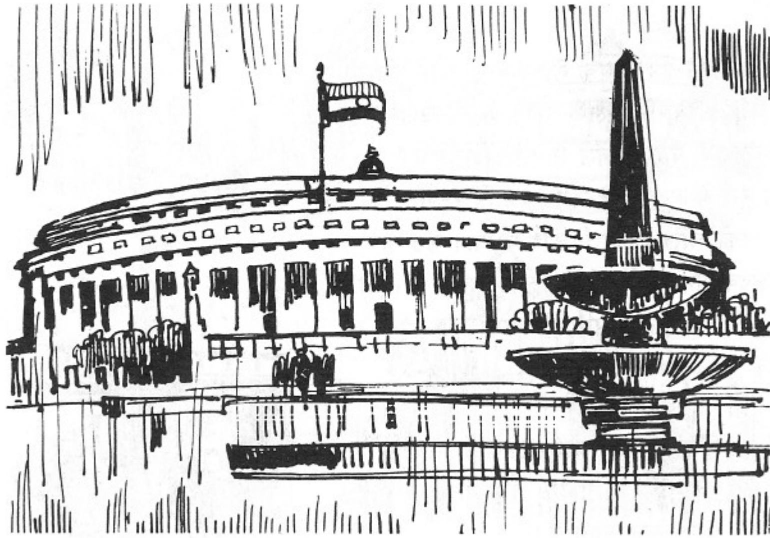
२. दुकानें

राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, विज्ञान भवन आदि यहाँ की महत्त्वपूर्ण इमारतें हैं। अन्य दर्शनीय स्थलों में इंडिया गेट, राजघाट, शान्तिघाट, पुराना किला, कुतुबमीनार, हुमायुँ का मकबरा आदि अधिक प्रसिद्ध हैं।

शहर में घूमने के सब से अच्छे साधन हैं—टैक्सी, औटो रिक्शा और बस।



३. शान्तिघाट
(पं. जवाहरलाल नेहरू की समाधि)



पाठ बत्तीस : ३२ :

बत्तीसवां : ३२वां : पाठ

दिल्ली के बारे में बातचीत

क्यों साहब, अगर मैं दो दिन में दिल्ली देख लेना चाहूं, तो मुझे क्या करना चाहिए?
दो दिनों में तो आप दिल्ली का थोड़ा-सा भाग ही देख सकेंगे।
शायद आपको मालूम नहीं है कि दिल्ली के दो भाग हैं—नयी दिल्ली और पुरानी दिल्ली।
और यह नगर सैकड़ों वर्गमील में फैला हुआ है।
अच्छा, तब तो मुझे जरूर बताइये कि सबसे पहले क्या देखना चाहिए?
यदि आपको ऐतिहासिक स्थान देखने हों, तो आप महरौली जायें, यह नयी दिल्ली के समीप है—वहां कुतुबमीनार है।
इसका संबंध कुतुबुद्दीन, पृथ्वीराज और उनसे भी पुराने राजाओं से जोड़ा जाता है।



१. कुतुबमीनार

वहां पांचवीं या छठी शताब्दि का विष्णुध्वज नामक विजय स्तम्भ है।
कुतुबमीनार से थोड़ी दूर पर पाण्डवों के पुराने किले के खंडहर हैं।
और पुरानी दिल्ली में कौन-कौन से स्थान देखने चाहियें?
पुरानी दिल्ली में मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा बनवाया गया प्रसिद्ध लाल किला है।
जहां प्रत्येक वर्ष स्वतन्त्रता-दिवस का समारोह होता है।
उसके सामने ही जामा मस्जिद है।
पुरानी दिल्ली में ही, दिल्ली विश्व-विद्यालय है। जामा मस्जिद से कोई आध घंटे का रास्ता है।
मुझसे एक मित्र ने कहा था कि राजघाट जरूर देखूं।
मैं भी आपसे यही कहने वाला था। राजघाट के पास ही शान्तिघाट और विजयघाट हैं वे भी अवश्य देखियेगा।
अच्छा, तो वहां और दर्शनीय स्थान कौन-से हैं?
वैसे तो बहुत से स्थान हैं परन्तु राष्ट्रपति-भवन, संसद-भवन, आकाशवाणी-भवन और विज्ञान-भवन विशेष दर्शनीय हैं।
अगर समय बचे तो और क्या-क्या देखना चाहिए?
ज्योतिष-विद्या में रुचि लेने वालों को जंतर-मंतर और धार्मिक रुचि के लोगों के लिए बिरला मंदिर भी दर्शनीय हैं।
और अगर मुझे कुछ खरीदना हो?
यूं तो जगह-जगह बहुत से अच्छे बाजार हैं परन्तु नई दिल्ली में कनॉट-प्लेस और पुरानी दिल्ली में चांदनी चौक यहां के विशेष बाजार[२] हैं।
बस की सुविधा तो मिलती ही होगी?
सो तो है। परन्तु दो दिन में आप बसों में कहां-कहां जा पायेंगे? टैक्सी अथवा ऑटोरिक्शा लीजियेगा।
जी; बहुत अच्छा। धन्यवाद।



२. बाजार



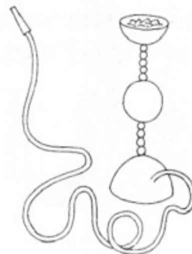


पाठ तैंतीस : ३३ :

तैंतीसवां : ३३वां : पाठ

पान और धूम्रपान

संसार के दूसरे देशों के लोगों की भांति भारत में भी बहुतसे लोग धूम्रपान करते हैं।
कुछ लोग हुक्का पीते हैं।
यह धूम्रपान का अत्यन्त पुराना ढंग है।
किन्तु अब लोग सिगरेट तथा बीड़ी पीना अधिक पसन्द करते हैं।
सिगार और पाइप का भी चलन हो गया है।
कुछ जातियों के लोग धूम्रपान नहीं करते।
स्त्रियां प्रायः धूम्रपान करना अच्छा नहीं समझतीं।



१. हुक्का

यदि सिगरेट[२] अथवा पाइप के लिए तम्बाकू खरीदना हो, तो आपको इनकी विशेष दुकानों पर जाना पड़ेगा।

इन बड़ी दुकानों के अतिरिक्त गलियों और बाजारों में आपको छोटी-छोटी दुकानों से भी सिगरेट और बीड़ियां मिल सकती हैं।

इन दुकानों को पान और बीड़ी[३] की दुकानें कहते हैं। इनको पान बीड़ी की दुकानें इसलिए कहते हैं कि बीड़ी के अतिरिक्त यहाँ पान भी बिकते हैं।

पान एक बेल का पत्ता है। इस पत्ते को चूना, कत्था, सुपारी और सौंफ के साथ चबाते हैं।

इन दुकानों की विशेषता यह है कि छोटी-सी होती हैं, परन्तु बहुत सुन्दर ढंग से सजी रहती हैं।

सामने की ओर अनेक प्रकार के तम्बाकू तथा सिगरेटों के डिब्बे रखे रहते हैं।

एक ओर पीतल के छोटे-छोटे बर्तनों में पान[४] तैयार करने के लिए कत्था, चूना, सुपारी आदि रहते हैं।

पान भारत की एक उल्लेखनीय विशेषता है। बहुत से परिवारों में आतिथ्य पान द्वारा ही किया जाता है।

भिन्न-भिन्न भागों में अलग-अलग प्रकार के पान के बीड़े बनाये जाते हैं।

साधारण रूप से कलकतिया, मघई और बनारसी पान पसन्द किये जाते हैं।

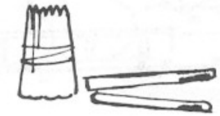
कुछ लोग पान में तम्बाकू भी खाते हैं।

इन्हीं दुकानों से दियासलाई[५] की डिबिया भी मिलती है।

आजकल प्रायः लोग सिगरेट-लाइटर[६] का प्रयोग करते हैं।



२. सिगरेट



३. बीड़ी



४. पान बेचना



५. दियासलाई



६. सिगरेट लाइटर



पाठ चौतीस : ३४ :

चौतीसवां : ३४वां : पाठ

धूम्रपान पर बातचीत

क्या भारत के लोग धूम्रपान करते हैं?

जी हां, संसार के दूसरे देशों की तरह, भारत में भी बहुत-से लोगों को इसकी आदत है।

मैंने सुना है कि कुछ धर्मों के माननेवालों को उनके धार्मिक नियमों द्वारा धूम्रपान करने से रोका गया है?

जी हां, यह सच है। सिख धर्म में धूम्रपान करना मना है।

क्या स्त्रियां धूम्रपान करती हैं?

स्त्रियां धूम्रमान को अच्छा नहीं समझतीं। बच्चों को धूम्रपान से सख्ती से रोका जाता है।

धूम्रपान के साधन बेचनेवालों की दुकानें तो बहुत होंगी?

जी हां, बड़े शहरों में सब प्रकार के सिगरेट[१] और पाइप[२] के सब प्रकार के तम्बाकू मिल सकते हैं। कई दुकानें ऐसी हैं, जिनमें केवल तम्बाकू और सिगरेट ही बिकते हैं।

छोटे नगरों में क्या व्यवस्था है?

छोटे नगरों की गलियों में पान-बीड़ी की छोटी-छोटी दुकानें होती हैं।

बीड़ी किसे कहते हैं?

तम्बाकू को एक विशेष वृक्ष के पतों में लपेट कर सिगरेट की तरह पीते हैं।

और पान किसे कहते हैं?

पान एक बेल के पत्ते का नाम है। इस पत्ते को चूना, कत्था, सुपारी और सौंफ के साथ चबाते हैं।

क्या भारतवासी पान के बहुत शौकीन हैं?

जी हां, पान यहां काफी प्रचलित है। अतिथि-सत्कार में भी प्रायः पान का प्रयोग किया जाता है।

क्या इन दुकानों पर हर प्रकार के सिगरेट मिल सकते हैं?

साधारण रूप से मिल जाते हैं, परन्तु अधिक दामों वाले सिगरेट ये लोग नहीं रखते। यदि किसी विशेष कम्पनी के सिगरेट या तम्बाकू की आदत हो, तो आवश्यकतानुसार उसे किसी बड़ी दुकान से खरीद लेना चाहिए।

बहुत अच्छा। सिगरेट सुलगाने के लिए दियासलाई तो हर जगह मिल जाती होगी?

जी हां। दियासलाई तो पान-सिगरेट की दुकानों के अलावा दूसरी दुकानों पर भी मिल जाती है। आजकल अलबत्ता सिगरेट लाइटर का रिवाज बढ़ रहा है।

ठीक है। मैं स्वयं सिगरेट लाइटर[३] का प्रयोग करता हूं। मेरे एक मित्र दियासलाई काम में लाते हैं।



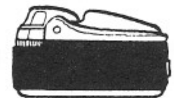
१. सिगरेट



२. पाइप



सिगार



३. सिगरेट लाइटर



पाठ पैंतीस : ३५ :

पैंतीसवां : ३५वां : पाठ

दर्ज़ी

भारत में अच्छे दर्ज़ियों की कमी नहीं।
देश के भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न नमूनों के कपड़े पहने जाते हैं।
बड़े शहरों के दर्ज़ी सब प्रकार के कपड़े सीने में निपुण होते हैं।
कुछ दर्ज़ी केवल मर्दों के कपड़े सीते हैं और कुछ सिर्फ़ स्त्रियों के।
दफ्तरों में काम करनेवाले अधिक संख्या में सूट पहनते हैं।
यदि आपको सूट सिलवाना हो, तो आप कपड़ा खरीदकर दर्ज़ी की दुकानपर ले जाइये।

वह फ़ीते से आपका नाप ले लेगा।
निर्धारित समय पर आप दर्ज़ी के पास जाकर सूट[१] को पहनकर देखिये।
जब आप इस प्रकार जांच के लिए सूट पहनेंगे तो शायद दर्ज़ी को इसमें कुछ परिवर्तन करना पड़े।
वह जेबों, बटनों तथा बटन के काजों के लिए निशान लगा लेगा।
कुछ दिनों बाद आपको सूट तैयार मिलेगा।
कुछ दर्ज़ी भिन्न-भिन्न प्रकार के कपड़े भी रखते हैं।
वे आपकी आवश्यकतानुसार आपका सूट तैयार कर देते हैं।
कपड़ों में अस्तर लगाने की आवश्यता हो तो अपनी पसन्द के अनुसार कपड़ा चुन लेना चाहिए।
ये कपड़े भी दर्ज़ियों के यहां मिल जाते हैं।
महिलाओं के वस्त्रों के फ़ैशन में बड़ी भिन्नता है और दर्ज़ियों के चुनाव में बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है।
कुछ दर्ज़ी ब्लाऊज़ सीने की विशेषता रखते हैं तो कोई फ्रॉक आदि की।
महिलाएं प्रायः साड़ी[२] पहनती हैं।
साड़ियाँ अनेक प्रकार की होती हैं।
ऋतु व समय के अनुसार वे सूती या रेशमी, सफ़ेद अथवा रंगीन साड़ियाँ पहनती हैं।
उत्तरी भारत में महिलाएं सलवार, कमीज़[३], ग़रारा इत्यादि पहनती हैं।
इन कपड़ों की सिलाई के लिए आपको ऐसे दर्ज़ियों के पास जाना चाहिए, जो इन्हें सीने में निपुण हों।
बड़े शहरों में इस विषय में कोई कठिनाई नहीं होती।
अपनी पसन्द के दर्ज़ी मिल जाते हैं।
आजकल बने बनाये अथवा रैडी-मेड[४] कपड़ों का भी काफ़ी प्रचार हो गया है।



१. सूट



२. साड़ी



३. सलवार-कमीज़



४. रैडीमेड कपड़े



पाठ छत्तीस : ३६ :

छत्तीसवां : ३६वां : पाठ

नये वस्त्रों का आर्डर देना

पुरुषों के वस्त्रों की दुकान पर

नमस्ते। मुझे एक सूट सिलवाना है। उसके लिए कुछ कपड़े दिखाइये। शरद ऋतु के अनुकूल वस्त्र चाहिएं, जो न बहुत भारी हों और न बहुत हल्के।

आप इस रंग को पसन्द करेंगे?

शरद ऋतु के लिए इसका रंग हल्का जान पड़ता है।

इससे कुछ और अधिक गहरे रंग का चाहिए।

यह दूसरा देखिये।

हां, यह उससे अच्छा है।

इस पर कितना खर्च होगा?

यह बहुत बढ़िया कपड़ा है, बहुत मुलायम और शुद्ध ऊन से बना है।

इसका सूट बनवाने में आपके २५० रुपये लगेंगे।

मैं जितना खर्च करना चाहता हूं, उस से यह कुछ अधिक है। इस से कुछ कम दाम का कपड़ा दिखाइये।

इस दाम में आपको इतना अच्छा कपड़ा नहीं मिलेगा। कितना भी पहनिये इस में सिलवट नहीं पड़ेंगे।

अच्छा तो यही दे दीजिये।

अच्छी बात है। यदि आप अपना कोट उतार दें, तो मैं आपका नाप[1] ले लूं।

बहुत अच्छा। यह लीजिये।

क्या आप आज के पंद्रहवें दिन जांच के लिए आ सकेंगे?

उस दिन तो बुधवार पड़ेगा। है न?

जी हां।

वह दिन अनुकूल रहेगा। मैं दो और तीन बजे के बीच में आऊंगा।

क्या इसी दुकान से महिलाओं के कपड़े नहीं प्राप्त हो सकते?

जी नहीं। हम महिलाओं के कपड़े नहीं सीते। बच्चों के सिले सिलाए कपड़े हमारे यहां से मिल सकते हैं।



१. नाप लेना

महिलाओं के वस्त्रों की दुकान पर

कहिए बहनजी आपको कैसी साड़ियां चाहियें?

मुझे सिल्क की छपी हुई साड़ियां[2] दिखाइये।

यह देखिये पीले रंग की साड़ी पर नीली किनारी कितनी सुन्दर लग रही है।

मुझे किनारी वाली साड़ी नहीं चाहिये। कोई बड़े-बड़े फूलों का डिज़ाइन हो।

तब तो आपको यह साड़ी अवश्य पसन्द आयेगी।

हां......लगती तो अच्छी है। इसे खोल कर दिखाइये।

ठीक है। इस में जो हरे रंग के फूल हैं उन्हीं के रंग का ब्लाऊज़ का कपड़ा दीजिए। हां। और इस के दाम क्या हैं?

फ़िक्र न कीजिये। आप से अधिक दाम तो नहीं लेंगे। यह देखिये ब्लाऊज़[3] का कपड़ा बिलकुल मैचिंग है।

अच्छा, तो यह दे दीजिए।



२. छपी हुई साड़ी



३. ब्लाऊज



पाठ सैंतीस : ३७ :

सैंतीसवां : ३७वां : पाठ

नाई

नाई समाज का एक बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है।

नियमित रूप से सभी को नाई की आवश्यकता पड़ती है।
प्रायः लोग दाढ़ी तो स्वयं ही बनाते हैं, पर बाल बनवाने के लिए तो नाई का सहारा लेना ही पड़ता है।

दाढ़ी और मूंछ[1] रखनेवाले भी, उनकी काट-छांट नाई से ही कराते हैं।

हां, सिख लोग बाल नहीं कटवाते और न ही दाढ़ी मुंडवाते हैं।

सामान्यतः भारतीय स्त्रियां भी बाल नहीं कटवातीं।



१. मूंछ

कुछ स्त्रियां बाल छंटवाती हैं और उन्हें घुंघराले करवाती हैं, पर इनकी संख्या अधिक नहीं है।

इस चित्र में आपको नाई की दुकान का भीतरी भाग नज़र आ रहा है।

किसी के बाल काटे जा रहे हैं, किसी की दाढ़ी बन रही है।

कुछ ग्राहक सोफ़े पर बैठे हैं और अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

उनमें से एक अख़बार पढ़ रहा है। एक ग्राहक दुकान छोड़ने की तैयारी में है।

उसके सिर के बाल अभी-अभी कटे हैं और शैम्पू[2] भी हुआ है।

नाई का एक सहायक उसके कोट पर ब्रुश फेर रहा है।

मैं सेफ्टी रेज़र[3] से अपनी दाढ़ी स्वयं बनाता हूं। मेरे एक मित्र उस्तरे का प्रयोग करते हैं।

मेरा भाई अपनी दाढ़ी बिजली के रेज़र[4] से बनाता है।

बहुत से लोग हर रोज़ दाढ़ी बनाते हैं।

कुछ लोग एक दिन छोड़कर दाढ़ी बनाते हैं।

शायद, आप भी अपनी दाढ़ी स्वयं ही बनाते हैं।
क्यों ठीक है न?

मेरा विचार है कि आदमी को अपनी दाढ़ी अपने आप ही बनानी चाहिए।

असल में मुझे यह पसन्द नहीं कि मेरे गाल और ठोड़ी पर कोई दूसरा आदमी झाग लेपता[5] रहे।

इसके अतिरिक्त नाई की दुकान पर जाने की अपेक्षा स्वयं हजामत बना लेने में समय की बचत होती है, अधिक सुविधा रहती है और कम ख़र्च होता है।



२. शैम्पू (बाल धोना)



३. सेफ्टी रेज़र



४. बिजली का रेज़र



५. झाग लेपता रहे



पाठ अड़तीस : ३८ :

अड़तीसवां : ३८वां : पाठ

नाई की दुकान पर बातचीत

कहिये, क्या आज्ञा है?

बस, बाल कटवाने हैं और दाढ़ी बनवानी है। नाखून भी कटवाना चाहता हूं।

बैठिये। यह पत्रिका लीजिये। आपको बहुत देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। अब आपकी ही बारी है।

बहुत अच्छा। धन्यवाद।

आइये, आपकी बारी आ गयी।

बहुत खूब। मुझे ज़्यादा देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी।

बाल कुछ छोटे भी करने हैं या केवल छांटने हैं?

बहुत छोटे तो नहीं।

अच्छा लीजिये साहब, बाल छंट गये। कृपया शीशे में देखिये ठीक हैं या नहीं।

ठीक हैं। धन्यवाद। आपने बिल्कुल मेरी इच्छा के अनुसार बाल काटे हैं।

धन्यवाद। अब दाढ़ी[१] बनाऊं?

हां, लेकिन सावधानी से। मेरी त्वचा बहुत कोमल है।

आप चिन्ता न करें। एक ही बार ऐसा हुआ था कि एक ग्राहक ने सर झटक दिया था और ठुड्डी कट गयी थी।

परन्तु मैं हजामत बनाते समय सर नहीं हिलाता हूं।

जी हां। अच्छा करते हैं आप...लीजिये हजामत बन गयी।

यह लीजिये नाखून काटनेवाली भी आ गयी।

धन्यवाद।

कृपया अपना हाथ[२] दीजिये। आपकी तर्जनी का नाखून बुरी तरह टूटा है।

हां, एक बार टूट गया था। दाहिने अंगूठे का नाखून[३] भी ज़रा सावधानी से काटना। इसमें कुछ दर्द है।

बहुत अच्छा।

धन्यवाद। आपके यहां महिलाओं के केश-प्रसाधन[४] का प्रबन्ध है?

मेरी पत्नी अपने बालों को घुंघराले बनवाना चाहती है।

जी हां, पासवाली दुकान में है।

यह कब बन्द होती है?

शाम के पांच बजे।

अच्छा, तो कुल कितने पैसे हुए?

दो रुपये और पचास पैसे।

ये लीजिये तीन रुपये। बाकी मत लौटाइये।

धन्यवाद।



१. दाढ़ी



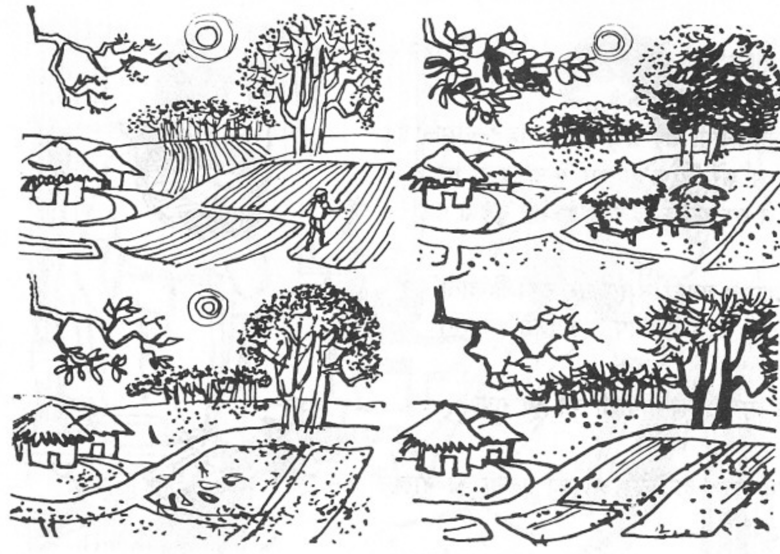
२. हाथ



३. अंगूठे का नाखून



४. महिलाओं का केश-प्रसाधन



पाठ उनतालीस : ३९ :

उनतालीसवां : ३९वां : पाठ

ऋतुएं

वर्ष छः ऋतुओं में बंटा हुआ है—वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर।
आखिरी तीनों ऋतुएं सर्दियों का मौसम हैं।
ग्रीष्म ऋतु का दूसरा नाम गर्मी है।
वसन्त में प्रकृति अपनी शीतकालीन नींद से जाग उठती है।
वृक्षों में नया जीवन आ जाता है, सूर्य की किरणों[1] से धरती में हल्की प्यारी गरमाहट आ जाती है।
आमों के बाग मंजरियों की सुगंध से महकने लगते हैं।
बाटिकाएं नये फूलों से मुस्करा उठती हैं।
पक्षियों के कलरव से बन और उपवन भर जाते हैं।



१. सूर्य की किरणें

वसन्त की रातें भी बड़ी सुहानी होती हैं। आसमान में नक्षत्र जगमगाते हैं।
धरती पर नयी महक, नयी मुस्कराहट छा जाती है।
इसीलिए भारत में वसन्त को ऋतुराज कहा जाता है।
अनेक पुराने और नये कवियों ने इसका सुन्दर चित्रण किया है।
ग्रीष्म के आते ही मौसम गर्म हो जाता है और कभी-कभी तो बहुत तेज़ गर्मी पड़ती है।
उत्तर और मध्य भारत में तो कई स्थानों पर ५०° सेण्टीग्रेड तक तापक्रम हो जाता है।
कुछ लोग सैर के लिए पहाड़ों पर चले जाते हैं।
किसान खलिहान में काम करते हैं।[2]
और अन्न को भूसे से अलग करते हैं।
वर्षा के आते ही आकाश में बादल छा जाते हैं।
कभी-कभी बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक के साथ आंधी आती है।
कभी घनघोर वर्षा होती है।[3]
चरागाहें हरी-हरी घास से ढंक जाती हैं।
नदियां उमड़ पड़ती हैं।
शरद में पकी फ़सल काटी जाती है और पके फल चुने जाते हैं।
आकाश साफ़ हो जाता है।
बादलों का नाम नहीं रहता।
इस ऋतु में दिन छोटा और रात बड़ी होने लगती है।
शरद की चांदनी बहुत निर्मल होती है।
शरद-पूर्णिमा की रात को लोग चांदनी का आनन्द लेने के लिए नदियों, झीलों या सागर के किनारे घूमने जाते हैं।
हेमन्त और शिशिर जाड़े के ही दूसरे नाम हैं।
इन दिनों में जाड़े की फ़सलें बोयी जाती हैं।
लोग ख़ूब काम करते हैं।
उत्तर भारत में कभी-कभी कहीं-कहीं पर रात का तापक्रम जमाव के बिन्दु तक पहुंच जाता है।
हिमालय की निचली चोटियां भी इस समय बर्फ़ से ढंक जाती हैं।
मैदानों में भी काफ़ी सरदी रहती है।
बम्बई और मद्रास, जैसे समुद्र-तट के नगरों में न अधिक गरमी पड़ती है और न अधिक सरदी।



२. किसान खलिहान में काम करते हैं



३. वर्षा



पाठ चालीस : ४० :

चालीसवां : ४०वां : पाठ

खेल-कूद के बारे में बातचीत

भारत में सबसे अधिक लोकप्रिय खेल कौन-कौन से हैं?

भारत में बहुत से परंपरागत खेल हैं, जैसे—कबड्डी,[१] खो-खो इत्यादि। ये बहुत लोकप्रिय हैं। इनमें खर्च कम पड़ता है।

खेल का जो उद्देश्य है—सहयोग, निर्भयता, सतर्कता आदि गुणों का विकास—भी इनके द्वारा पूरा होता है।

आधुनिक खेलों में हॉकी, फ़ुटबाल और क्रिकेट भी यहां बहुत प्रचलित हैं।

हॉकी तो भारत का राष्ट्रीय खेल जैसा हो गया है।

विद्यालयों और महाविद्यालयों में ये खेल अधिक लोकप्रिय हैं।



१. कबड्डी

फ़ुटबाल प्रायः नरम धरती के मैदानों में खेला जाता है, इसलिए वर्षा ऋतु में इस खेल को बहुत पसन्द किया जाता है।

क्रिकेट में लोगों की विशेष दिलचस्पी है। टैनिस[२] वर्ष के सब महीनों में खेला जाता है।



२. टैनिस

दूसरे खेलों में घुड़-दौड़, मोटर की रेस, तैराकी और बॉकसिंग भी उल्लेखनीय हैं।

बैडमिण्टन और बास्केट बाल भी भारतीयों को पसन्द हैं।

बड़े-बड़े शहरों में पोलो[३] खेलते हैं।

जंगलों के समीप प्रदेशों में शिकार खेला जाता है।



३. पोलो

उत्तर भारत के पर्वतों पर "स्की" द्वारा बर्फ़ पर फिसलने के खेल खेले जाते हैं।

कुश्ती भी एक खेल ही है, जो यहां काफ़ी प्रचलित है।

क्या भारत में गौल्फ़[४] खेलते हैं?

जी हां। बड़े शहरों और उनके उपनगरों में कुछ गौल्फ़ खेलने के मैदान हैं।

घर के अन्दर बैठकर खेले जानेवाले कौन-कौन से खेल हैं?



४. गौल्फ़

भीतरी खेलों में शतरंज,[५] बिलियर्डस,[६] ताश,[७] टेबल-टैनिस आदि हैं।

क्या आप टेबल-टैनिस खेलते हैं?

जी हां? परन्तु मैं इस खेल द्वारा जीवन-निर्वाह करनेवाला खिलाड़ी या चैंपियन नहीं हूं।

मैं एक शौकिया खेलनेवाला खिलाड़ी हूं। और वह भी मामूली।



५. शतरंज



७. ताश



६. बिलियर्ड



पाठ इकतालीस : ४१ :

इकतालीसवां : ४१वां : पाठ

किसान

पिछले कुछ सालों में इस देश में काफ़ी औद्योगिक प्रगति हुई है।
फिर भी भारत मुख्यतः खेतिहर देश है।
गांधीजी कहा करते थे...वास्तविक भारत उसके गांवों में ही है...।
भारत के खेती करने के साधन बहुत सरल हैं।
सामान्यतः बैलों द्वारा हल से खेत जोते जाते हैं।
बड़े-बड़े खेतों या फ़ार्मों में ट्रैक्टर से जुताई की जाती है।
प्रायः भारतीय किसान, परंपरागत ढंग से खेती करता है।

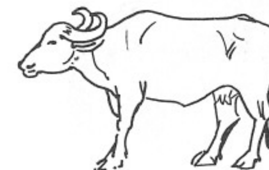
वह सवेरे तड़के, हल लेकर खेतों में चला जाता है।
दोपहर की धूप हो, या बादलों की छांह, उसे अपने काम से काम।
जुताई ही नहीं, बुवाई, निराई, सिंचाई—सब कुछ वह अपने हाथ से करता है।
सालों तक वह अपने पुराने विचारों के कारण आजकल के यंत्रों का प्रयोग नहीं करता था।
परंतु अब, वह समझने लगा है कि खेती के परंपरागत तरीके उपयोगी नहीं हैं और उसे अपनी आदत और काम करने के तरीके को बदलना चाहिए।
अब किसान नयी विधियों से खेती करता है और सरकार की सहायता द्वारा पैदावार काफ़ी बढ़ गयी है।
वर्षा के पानी पर ही किसान निर्भर नहीं रहता।
उसके पास सिंचाई के लिये कुएं, तालाब और नहरें हैं।
नये बांधों ने सिंचाई का काम और भी सुविधाजनक कर दिया है।
इन बांधों पर सरकार ने काफ़ी ख़र्च किया है और नदियों के पानी को किसानों के लिए उपलब्ध कर दिया है।
मुर्गीपालन-उद्योग बहुत बढ़ चला है, और पैदावार बढ़ाने के लिए आधुनिक तरीके काम में लाये जा रहे हैं।
देश का पशु-धन बढ़ाना भी आवश्यक है, इस ओर काफ़ी प्रगति हो रही है।
किसानों को पशु-धन के महत्व का ज्ञान है।
उनको अपने पशुओं पर गर्व है।
पशुओं द्वारा प्राप्त दूध कई एक सहकारी डेरियों में जाता है जहाँ न केवल अधिक बल्कि बढ़िया दूध के पदार्थ तैयार होते हैं।



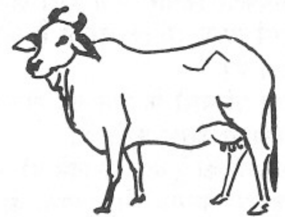
१. किसान



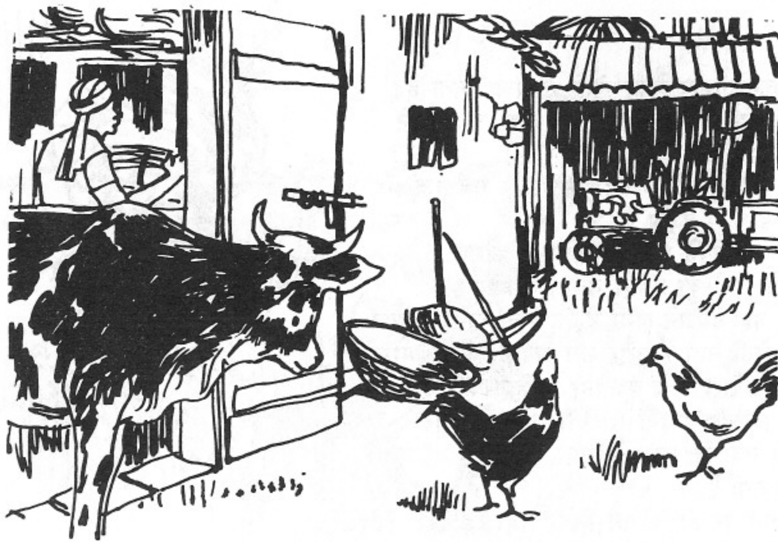
२. मुर्गियां



३. पशु (भैंस)



३. पशु (गाय)



पाठ बयालीस : ४२ :

बयालीसवां : ४२वां : पाठ

किसान के विषय में बातचीत

कृपया मुझे भारत में खेती-बाड़ी के बारे में कुछ बतलाइये।
भारत में अधिकतर किसान परंपरागत ढंग से खेती करते हैं।
सारा परिवार खेत में काम करता है।
क्या आधुनिक ढंग की मशीनें खेती के काम में लायी जा रही हैं?
जी हां, आधुनिक औज़ारों को काम में लाया जा रहा है।
अधिकतर किसान बैलों द्वारा खेती करते हैं।[1]
इसमें समय अधिक लगता है और श्रम भी बहुत होता है।
जिन परिवारों के पास बड़े खेत या फ़ार्म हैं, वे ट्रैक्टर से जुताई करते हैं।
किसानों को ट्रैक्टर खरीदने की आवश्यकता नहीं होती।
सहकारी संस्थाओं से किसानों को किराये पर ट्रैक्टर मिल जाते हैं।

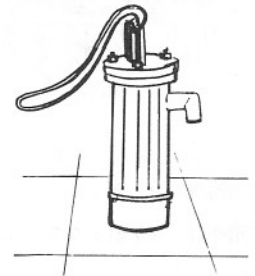


१. बैलों द्वारा खेती करते हैं

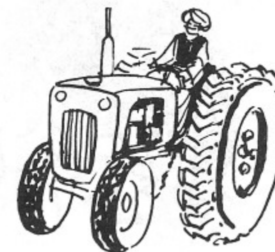
किसान के जीवन के बारे में कुछ बताइये?
भारत का किसान प्रातःकाल बहुत जल्दी उठता है और खेतों में चला जाता है।
वहां दिन भर हल चलाता है, सिंचाई या निराई करता है।
फ़सल पकने पर कटाई का काम शुरू होता है।
वर्ष में किसान को कभी-कभी अवकाश भी मिलता है।
फ़ुरसत के दिनों में वह शादी-विवाह[2] और दूसरे उत्सवों का आयोजन करता है।
किसान पशु पालता है, कुछ किसान मुर्गियां भी पालते हैं।
भारत सरकार इन कामों के लिए किसानों की बहुत सहायता कर रही है ताकि लोगों को अंडे, मुर्गी इत्यादि अधिक मात्रा में मिल सकें।
सिंचाई के क्या-क्या साधन हैं?
अधिकतर सिंचाई का पानी तो वर्षा से ही मिलता है।
परन्तु वर्षा का सदा भरोसा नहीं रहता।
इसलिए नहरों और कुओं से भी सिंचाई होती है।
कुओ में बिजली के नल[3] भी लगाये जाते हैं।
गांव के लोगों को खेती की आधुनिक व्यवस्थाओं से परिचित करने के लिए भी कुछ किया जा रहा है?
जी हां, आजकल किसानों को आधुनिक औजारों के इस्तेमाल और खाद से परिचित कराया जा रहा है।
लगभग हर गांव में सरकारी समिति होती है, जो अच्छे बीज, ट्रैक्टर[4] आदि देती है।
इसके अतिरिक्त मुर्गीपालन तथा दूध-उत्पादन आदि की शिक्षा और सुविधा दी जा रही है।
इससे अच्छा दूध प्राप्त हो रहा है।



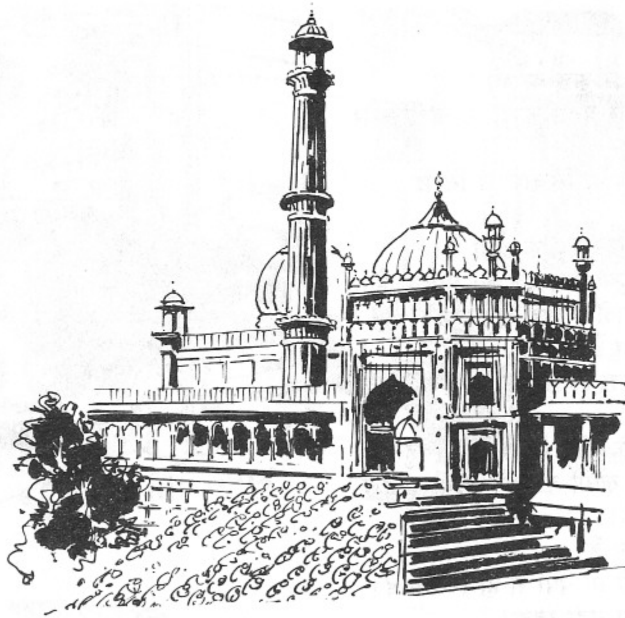
२. शादी-विवाह



३. नल



४. ट्रैक्टर


ईद की नमाज़

पाठ तैंतालीस : ४३ :
तैंतालीसवां : ४३वां : पाठ

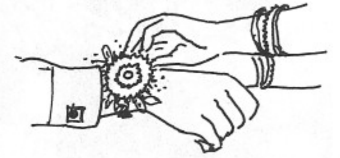
भाग–१

भारतीय उत्सव

भारत के लोग कई उत्सव[1] मनाते हैं।
यहां हम केवल दीपावली, होली रक्षाबन्धन, दशहरा, ईद और क्रिसमस प्रख्यात उत्सवों का वर्णन करेंगे।
दीपावली का उत्सव कार्तिक मास में मनाया जाता है।
इस दिन लक्ष्मी का पूजन होता है तथा मोमबत्तियां और दिये जलाये जाते हैं।
घर दीपों के प्रकाश से जगमगा उठते हैं।
कहा जाता है कि इसी दिन राम लंका से विजयी होकर अयोध्या लौटे थे।


१. उत्सव

होली का उत्सव फाल्गुन में होता है।
इस अवसर पर लोग होलिका जलाते हैं।
एक दूसरे पर रंग डालते हैं और गुलाल छिड़कते हैं।
तथा पुराने झगड़े भूल कर गले मिलते हैं।
रक्षाबन्धन के दिन स्त्रियां[2] अपने भाइयों की कलाइयों पर पवित्र धागा राखी बांधती हैं।


२. राखी बाँधती हैं

दशहरे पर युद्ध तथा विद्या संबंधी साधनों की पूजा होती है।
इस अवसर पर राम की कथा नाटकीय ढंग से प्रस्तुत की जाती है। इसे रामलीला कहते हैं।
बंगाल में दुर्गा-पूजा का आयोजन होता है।
इसके अतिरिक्त संक्रान्ति, रथ-यात्रा, रामनवमी, कृष्ण-जन्माष्टमी, बुद्ध-जयन्ती आदि अन्य पर्व मनाये जाते हैं।
संक्रान्ति शिशिर में होती है।
दक्षिण भारत में यह उत्सव अधिक उत्साह से मनाया जाता है।


३. गुरु नानक देव

भारत में बहुत से धर्म प्रचलित हैं और हरेक धर्म के बहुत से अनुयायी हैं।
इन धर्मों को स्थापित करनेवालों, पैगंबरों और अवतारों के जन्म-दिन महत्त्वपूर्ण हैं।
सिक्ख गुरु नानक[3] का जन्म-दिन मनाते हैं और पारसी जरथुस्त्र का जन्म-दिन मनाते हैं।
रामनवमी, कृष्ण-जन्माष्टमी तथा बुद्ध-जयन्ती राम, कृष्ण और बुद्धके जन्म-दिवस हैं।
अन्य उत्सवों में ईद और क्रिसमस मुख्य हैं।
क्रिसमस के अवसर पर ईसाई अपने घरों को सजाते हैं।
गिरजाघरों[4] में विशेष प्रार्थना का आयोजन होता है।
इस दिन विशेष आमोद-प्रमोद के कार्यक्रम होते हैं।
ईद के दिन मुसलमान नये और अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनते हैं और मस्जिदों अथवा खुले मैदानों में भारी संख्या में सामूहिक नमाज़ पढ़ी जाती है।
और गले मिलकर "ईद मुबारक" कहकर एक-दूसरे का अभिनंदन किया जाता है।


४. गिरजा घर


दिवाली

पाठ तैंतालीस
तैंतालीसवां पाठ

भाग–१

उत्सव के संबंध में बातचीत

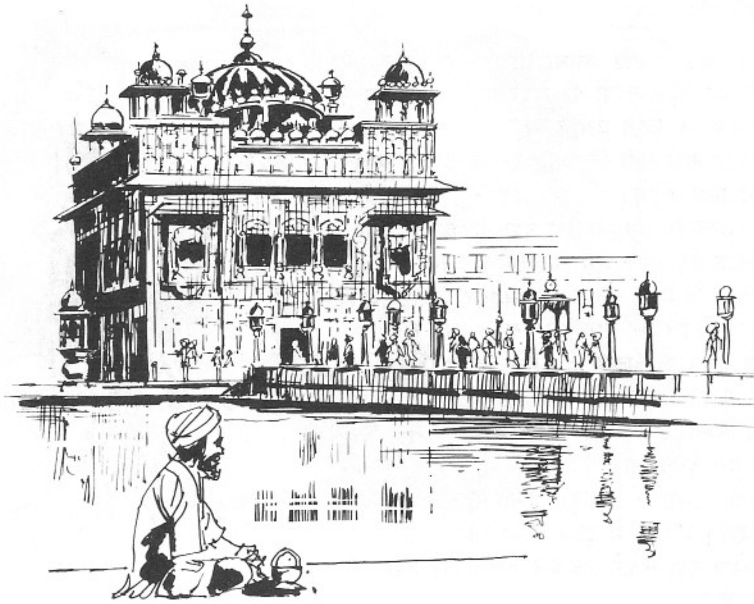
मुझे हर्ष है कि मैं व्यापार संबंधी कारणों से दिल्ली में जनवरी के महीने में आया हूं।
अब दिल्ली में गणतंत्र-दिवस देखने की मेरी इच्छा पूरी हो सकेगी।
आप अवश्य बहुत प्रभावित होंगे।
भारत भर में गणतंत्र दिवस बहुत उत्साह से मनाया जाता है।
इस दिन का सबसे वैभवशाली कार्यक्रम दिल्ली में "परेड" का होता है।
जी हां, मैंने इस "परेड" के विषय में बहुत कुछ सुन रखा है।
और मैं भारत के भिन्न-भिन्न भागों के रंग-बिरंगे लोक-नृत्य देखने का इच्छुक हूं।


१. लोक-नृत्य
(भांगड़ा)

मेरे एक मित्र ने मुझे बताया था कि इस अवसर पर दिखाये गये लोक-नृत्यों की सुंदरता और प्रतिभा का उसके मन पर बहुत प्रभाव पड़ा।
इसमें कोई शक नहीं कि आप इन नृत्यों से बहुत आनन्द प्राप्त करेंगे।
इसके अतिरिक्त आपको इस देश की प्रगति और यहां की जनता की शक्ति तथा एकता का अनुमान होगा।
मैं फ़रवरी के मध्य तक बम्बई नहीं लौटूंगा, हम दोनों गणराज्य-दिवस का कार्यक्रम इकट्ठे देख सकेंगे।
यह तो बहुत ही अच्छा है। मैंने कई बार आपसे एक सवाल पूछना चाहा है।
पिछले अक्तूबर में मैं बम्बई में था और मैंने दीपावली का उत्सव देखा था।
शहर की शोभा से मैं बहुत प्रभावित हुआ।
सारा शहर प्रकाश में डूबा हुआ था।
क्या आप बता सकेंगे कि इस उत्सव का क्या महत्त्व है?
जी हां, कहा जाता है कि दीवाली के दिन रामचन्द्रजी राजा रावण को पराजित करके अपनी राजधानी अयोध्या लौटे थे।
उनके आने की खुशी में अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया था।
अच्छा, कुछ और महत्त्वपूर्ण उत्सवों के बारे में बताइये।
पन्द्रह अगस्त को भारत आज़ाद हुआ था।
इस दिन सारे भारत में छुट्टी रहती है।
बहुत खूब।
आपके यहां नये वर्ष का उत्सव[३] कब मनाया जाता है?
भारतीय पंचांग के अनुसार नये वर्ष का उत्सव चैत्र में होता है।
किन्तु अब अधिकांश लोग पहली जनवरी को वर्ष का प्रारम्भ मानते हैं और मित्रों तथा संबंधियों के प्रति शुभ-कामनाएं व्यक्त करते हैं।


२. गणराज्य दिवस का कार्यक्रम


३. उत्सव



"गोल्डन टैम्पल" अमृतसर

पाठ चौवालीस : ४४ :

चौवालीसवां : ४४वां : पाठ

भाग–१

भारत-दर्शन

ईसा से तीन हजार साल पहले जब आर्य उत्तरी भारत में आये, तब भी भारत एक प्राचीन देश था।
ईसा से छः शताब्दी पूर्व बुद्ध[1] और महावीर ने प्रेम और अहिंसा, शुद्ध विचारों और नेक कर्मों का उपदेश दिया था।
उनके पश्चात सम्राट अशोक ने बुद्ध मत का प्रचार किया।
सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मुगलों ने भारत का राज संभाला और यहीं बस गये।
ईसा के बाद की पहली शताब्दी में ही इस देश में ईसाई मत का प्रचार होने लगा।



१. महात्मा गौतम बुद्ध



२. कला के नमूने



३. पूजा-स्थल

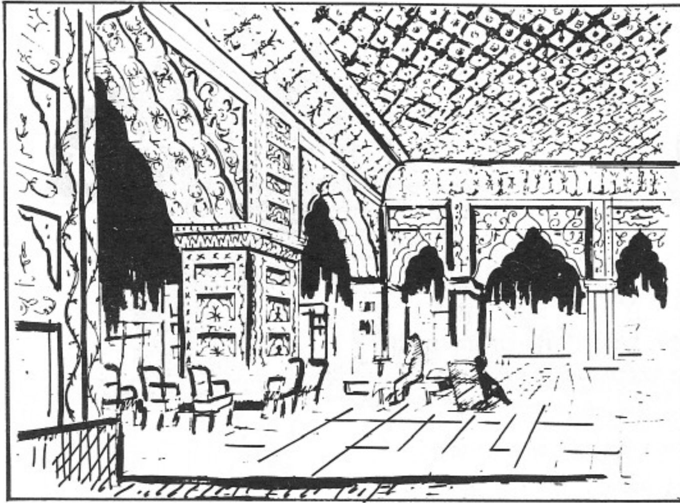
इन सब आंदोलनों ने इस विशाल और प्राचीन धरती पर एक अद्वितीय और अनोखी संस्कृती को जन्म दिया।
इस विशाल देश की चारों दिशाओं में कला और सुन्दरता के नमूने बिखरे पड़े हैं।[2]
और यहां की जनता के भिन्न-भिन्न धर्मों के पूजा-स्थल[3] जगह-जगह स्थापित हैं।
भारतीय प्रजातंत्र की राजधानी दिल्ली है।
दिल्ली नाम के दो शहर हैं, पुरानी दिल्ली शाहजहां ने बसायी थी और नयी दिल्ली अंग्रेज़ों ने बसायी थी।
शाहजहां ने आगरा में ताजमहल[4] भी बनवाया था जो कि प्रेम का सबसे बड़ा पाषाण-स्मारक है।
आगरा से कुछ मील दूर फतेहपुर सीकरी प्रसिद्ध शहर है, जिसे अकबर ने १५६९ में बनवाया था।
खूबसूरत महलों और रंग-बिरंगे कपड़े पहननेवाले लोगों का जयपुर शहर दर्शकों के लिए रोमांचकारी है।
उदयपुर की झीलें, टापुओं पर बने हुए महल और बाग़ बहुत खूबसूरत हैं।
राजस्थान में अजमेर के नजदीक सुप्रसिद्ध मुस्लिम सूफ़ी ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है।
यह मुसलमानों का तीर्थ-स्थल है और दूसरे धर्मों के माननेवाले भी जियारत के लिए जाते हैं।
वाराणसी हिन्दुओं का तीर्थ-स्थल है।
पहाड़ी स्थलों में सबसे सुन्दर कश्मीर की घाटी है, जिसे धरती पर स्वर्ग कहा जाता है।



३. पूजा-स्थल



४. ताजमहल



पाठ चौवालीस
चौवालीसवां पाठ

भाग–१

भारत दर्शन

मध्यप्रदेश की विशेषता यहां के प्राचीन स्मारकों[१] और जातियों में पायी जाती है।
औद्योगिक शहर कानपुर से डेढ़ सौ किलोमीटर दूर खजुराहो के सुप्रसिद्ध मंदिर हैं।
ये मंदिर लगभग एक हज़ार साल पुराने हैं।
वहां से थोड़ी दूर ग्वालियर का प्रभावशाली किला और उज्जैन के महल हैं।
भारत के पश्चिमी तट पर बम्बई एक विशिष्ट शहर है।
संसार के दूसरे बड़े आधुनिक शहरों की तरह यह भी विषमताओं से भरा हुआ शहर है।
इसमें आश्चर्यजनक सुन्दरता और भयानक कुरूपता एक साथ देखने को मिलती है।



१. प्राचीन स्मारक

बम्बई से कुछ ही घण्टों की यात्रा करके संसार के सुप्रसिद्ध अजन्ता और एलौरा के पाषाण-मंदिर देखे जा सकते हैं।



२. खण्डहर

पूर्वी तट पर कलकत्ता विशाल शहर है।
यह व्यापार और उद्योग का बहुत बड़ा केन्द्र है।
इस आधुनिक शहर से नज़दीक टैगोर द्वारा स्थापित "शान्तिनिकेतन" है।
बुद्ध गया बिहार राज्य में है।
यहां पर भारत की सर्व श्रेष्ठ बौद्ध समाधियां हैं।
इसके समीप ही पांचवीं शताब्दी के नालन्दा विश्वविद्यालय के खण्डहर[२] हैं।
भारत की मध्यकालीन कला के नमूने उड़ीसा राज्य में हैं। भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क के मंदिरों पर खुदाई और नकाशी की सुन्दरता का मुकाबला कोई नहीं कर सकता।
जगन्नाथ का मशहूर मंदिर[३] भी वहीं है।



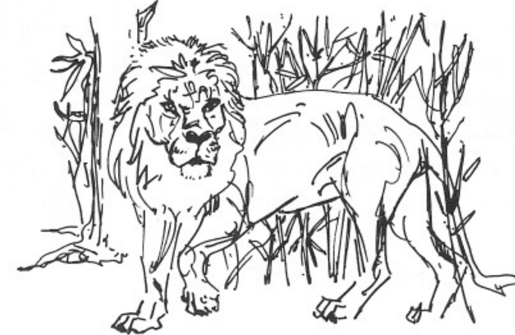
३. मंदिर

दक्षिण भारत में मंदिरों का एक जाल सा बिछा हुआ है। देश-विदेश से लोग इन्हें देखने के लिये आते हैं।
दक्षिण के इन मंदिरों की सुंदरता का प्रतिद्वन्द्वी केवल केरल राज्य है
इसे पूर्व का "वेनिस" कहते हैं।
वृंदावन बाग़ और जोग आबशार ने मैसूर को आकर्षक बना दिया है।
पर्वत को काटकर बनाये गये महाबलीपुरम मंदिर के अतिरिक्त मद्रास कई बातों के लिए सुप्रसिद्ध है।
यहां का समुद्री तट संसार भर में मशहूर है और सैर करने के लिए सुन्दर स्थान है।

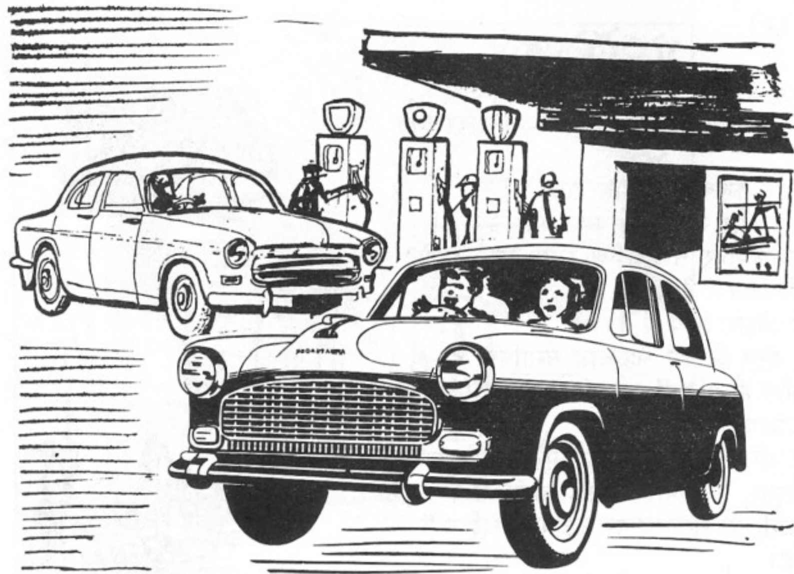


नारियल के पेड़

हिमालय की तराई में कॉरबट्ट पार्क नामी सुरक्षित जंगल में शेर[४], चीता, हिरन आदि को हिंसा-प्रेमी मानव के हाथों से बचाकर रखा गया है।



४. सुरक्षित जंगल में शेर



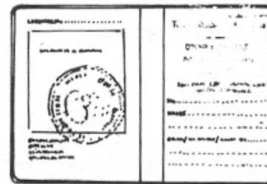
पाठ पैंतालीस : ४५ :

पैंतालीसवां : ४५वां : पाठ

भाग–१

कार चलाना

कार चलाने से पहले कार चलाने की परीक्षा देकर कार चलाने का लाइसेंस[1] लेना आवश्यक है।



१. कार चलाने का लाइसेंस

भारत में मोटर चलाने के विषय में कानून की जानकारी भी जरूरी है।

उदाहरण के रूप में यह जानना जरूरी है कि चलाते समय गाड़ी को सड़क पर अपने बायें हाथ की ओर रखना चाहिए और अपनी मोटर को दूसरी मोटर से आगे ले जाने के लिए दाहिनी ओर से निकलना चाहिए।

शहरों और घनी आबादी के क्षेत्रों में मोटर की रफ्तार पर पाबंदी है।

इसलिए सावधान रहें, कहीं इसका अतिक्रम न हो जाय।

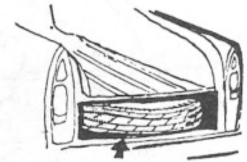
और यातायात की रोशनी पर भी ध्यान रखिये।

यदि हरी रोशनी हो तो इसका अर्थ है कि आप जा सकते हैं, किन्तु यदि लाल रोशनी दिखायी दे, तो आपको तुरन्त रुक जाना चाहिए।

कार के इस चित्र को देखिये।

यह चार सीट की गाड़ी है।

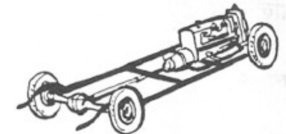
कार के पिछले भाग में सामान, अतिरिक्त पहिया[2], औजार और जैक रखने के लिए स्थान है।



२. अतिरिक्त पहिया

पेट्रोल की टँकी में चौवन लिटर पेट्रोल रह सकता है और कार पांच लिटर में लगभग पच्चीस मील जाती है।

कार के भिन्न-भिन्न पुर्जों के हिन्दी में नाम नहीं हैं, इसलिए अंग्रेजी नामों का ज्यों का त्यों प्रयोग होता है।



३. चैसिस

कार के भिन्न-भिन्न भागों के नाम सीख लीजिये: चैसिस[3], बॉनेट, बाडी, व्हील्स, टायर, रेडिएटर, इंजिन, स्टीयरिंग व्हील[4] और बूट।

सामने के शीशे पर वाईपर लगा रहता है।

डैश-बोर्ड[5] पर गतिसूचक मीटर, घड़ी, पेट्रोलमापक, स्टार्टर तथा दूसरे यन्त्र लगे हैं।



४. स्टीयरिंग व्हील

ड्राइवर के पैर धरने के स्थान पर क्लच तथा पैर का ब्रेक और ऐक्सलरेटर है।

गीयर लीवर और हाथ का ब्रेक उसके नजदीक है।

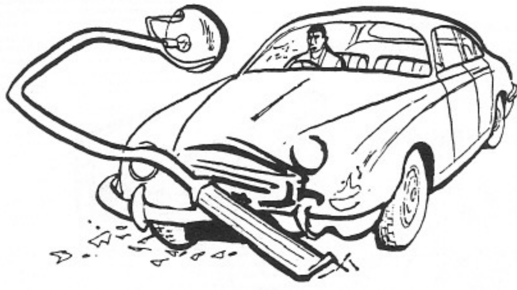
ड्राइवर अभी-अभी कार को मरम्मत के लिए गैरेज के सामने ले आया है।

इंजिन में कुछ खराबी है। चलने में "मिस फ़ायर" करता है।





५. डैश-बोर्ड



पाठ पैंतालीस
पैंतालीसवां पाठ

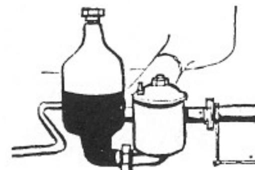
भाग–२

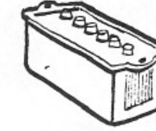
क़ार की ख़राबी


१. क्या ख़राबी है?

मैं चाहता हूं ज़रा आप मेरी कार देख लें।
क्या ख़राबी है?
मैं ठीक-ठीक तो नहीं बता सकता कि इसमें क्या हो गया है, किंतु चलाने में कई तरह की कठिनाइयां महसूस करता हूं।
सेल्फ़ स्टार्टर[2] से इंजिन चालू करने में मैंने लगभग सारी बैटरी ख़त्म कर दी है।
मैंने प्लगों को साफ कर लिया है और उनकी जांच भी कर ली है।
कार्बोरेटर[3] भी ठीक हालत में जान पड़ता है।
कृपया जांचकर बतलाइये कि क्या ख़राबी है?
जी, मैं अभी जांच लेता हूं। आप कार को उस ओर पार्क कर दीजिये।
हमारा मिस्त्री अभी इसकी जांच कर लेगा।
आप एक घण्टे के बाद आइये। हम आपको पूर्ण विवरण दे सकेंगे।


२. सैल्फ स्टार्टर


३. कार्बोरेटर

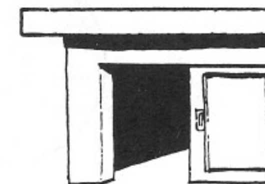
४. बैटरी


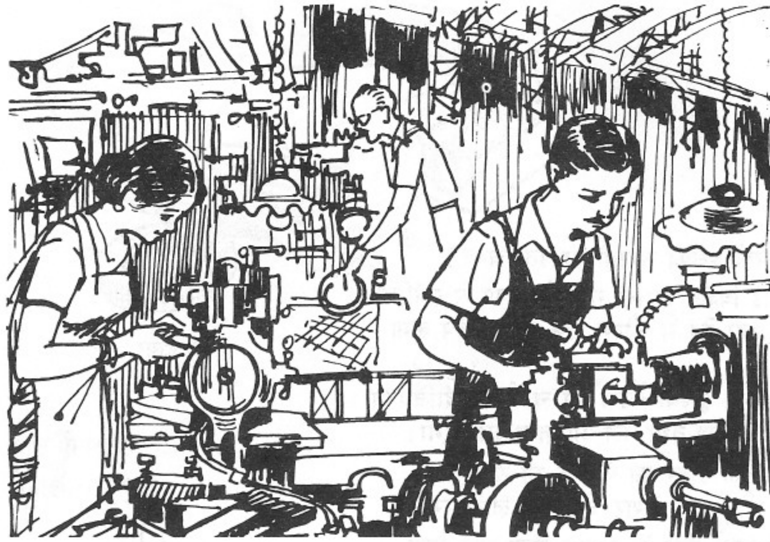
हां, तो आपको इसकी ख़राबी का पता चला?
जी हां। कोई विशेष ख़राबी नहीं है। पम्प से संबंधित पाईप रिस रहा है। मैं फौरन एक नया पाईप लगा देता हूं।
अच्छी बात है। कृपया बैटरी[4] भी चार्ज कर दीजिएगा और कार में ग्रीज़ तथा तेल भी लगा दीजिएगा।
इसके अतिरिक्त टायर का पंक्चर भी ठीक कर दीजिएगा और टायर-प्रेशर भी जांच लीजिएगा।
ब्रेक भी संभवतः ढीले हैं. अच्छा होगा यदि आप उनकी भी परीक्षा कर लें और उन्हें ठीक कर दें।
और भी कुछ ख़राबी हो तो अभी कह दीजिये। फिर अगले सोमवार से दो दिनों के लिए हमारा कारख़ाना[7] बन्द रहेगा।
अगली ओर ड्राइवर के बायें हाथ का विंग और बम्पर भी कुछ टेढ़े हैं। वे कुछ चोट खा गये थे।
यह कार भीगी सड़क पर फिसल गयी थी और एक बिजली के खंभे से टकरा गयी।
और हां, पिछली लाइट के लिए एक बल्ब[6] चाहिए।
असल में आप कार की पूर्णतया ओवरहालिंग कर दीजिए और जब यह तैयार हो जाय तो मुझे सूचित कर दीजिएगा।
कल शाम के चार बजे आकर ले जायें।
कल मैं तो न आ सकूंगा। मेरा ड्राइवर आकर ले जायेगा।
बहुत अच्छा।


५. टायर


प्लग


६. बल्ब


७. कारख़ाना



पाठ छियालीस : ४६ :

छियालीसवां : ४६वां : पाठ

भाग–१

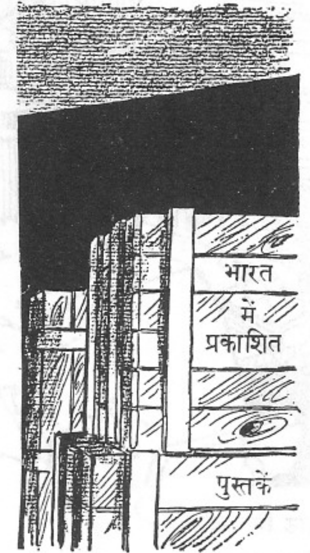
वाणिज्य और उद्योग

यद्यपि भारत एक कृषिप्रधान देश है, फिर भी यहां औद्योगिक वस्तुओं का उत्पादन बहुत बढ़ गया है।
अब भारतीय वस्तुएं, जिनमें मशीनें भी हैं, संसार के दूसरे भागों को निर्यात की जा रही हैं।
भारतीय उद्योगपतियों ने दूसरे देशों के लोगों से या वहां के सरकारी महकमों से मिलकर उद्योग शुरू किये हैं।
थोड़े परिमाण में माल पैदा करनेवाले कई उद्योग स्थापित हुए हैं।
जहां-जहां नये उद्योगों की स्थापना हुई है, वहीं नये शहर बस गये हैं।

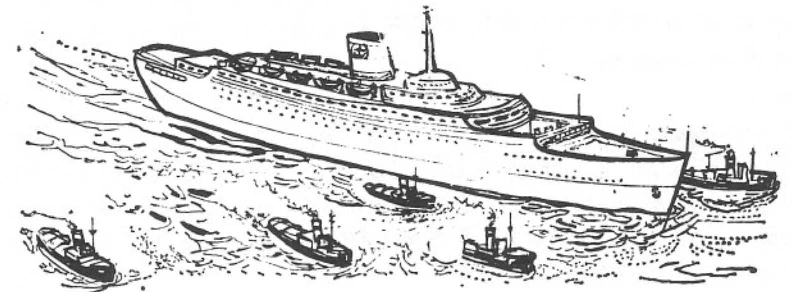


१. संसार

नतीजा यह है कि आबादी देश के एक भाग से दूसरे भाग में आने जाने लगी है।
मरु भूमि और जंगलों के क्षेत्र देखते ही देखते बड़े-बड़े नगरों का रूप ले चुके हैं, जहां उद्योग का चक्र दिन रात चल रहा है।
संसार के जिन देशों में रेलें प्रचलित हैं, उनमें भारत एक ऐसा देश है, जहां रेलों का जाल बिछा हुआ है।
सड़कों द्वारा यातायात भी बहुत बढ़ गया है।
बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, कोचीन, विशाखापतनम, मारमागोवा, और काण्डला के बड़े बड़े बंदरगाहों में दिन रात जहाज माल से भरे जा रहे हैं और खाली किये जा रहे हैं।
इन सब प्रवृत्तियों द्वारा देश की आर्थिक उन्नति हो रही है।
निर्यात की मात्रा प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है।
इन कारणों से लोगों का जीवन-स्तर धीरे-धीरे अच्छा हो रहा है।
भारत में प्राकृतिक धन का अभाव नहीं है।
धातुओं के ज़्यादा से ज़्यादा भण्डार प्राप्त हो रहे हैं और देश के खनिज तेल के भण्डारों से भी लाभ उठाया जा रहा है।
परमाणु शक्ति के विकास के संबंध में भारत ने काफ़ी तरक्की की है।
भारतीय लक्ष्य के अनुसार कृषि, जीव-विद्या, उद्योग और चिकित्सा के क्षेत्र में परमाणु शक्ति के उपयोग को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।



२. निर्यात बढ़ता जा रहा है



३. दिन रात जहाज आ जा रहे हैं



पाठ छियालीस

छियालीसवां पाठ

भाग–१

एक व्यापारिक भेंट

नमस्ते।

नमस्ते।

मुझे जैन साहब से मिलना है।

मैंने उनसे मिलने के लिए समय निश्चित कर रखा है। उन्होंने मुझे आज बुलाया है। यह देखिये उनका पत्र।

आप ही श्री रामनाथ मिश्र हैं?

जी हां। मुझे ही रामनाथ मिश्र कहते हैं।

श्री जैन का ऑफ़िस दायें हाथ के तीसरे कमरे में है।

वे आप ही की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

धन्यवाद।

नमस्ते जैन साहब।

नमस्ते मिश्रजी। बैठिये, मैं आप ही की प्रतीक्षा कर रहा था। हमें आपसे व्यापार करने का सौभाग्य आज तक प्राप्त नहीं था, परन्तु मुझे उम्मीद है कि अब हम व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित कर पायेंगे।

जैन साहब, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हमारी फ़र्म सुप्रसिद्ध है और हम व्यापार में आपको संन्तुष्ट कर सकेंगे।

बहुत अच्छा। आपको मालूम है कि हमारी कम्पनी टेक्निकल और शैक्षणिक पुस्तकें प्रकाशित करती है

और हमने इस देश के व्यापारिक क्षेत्र में नाम पैदा कर लिया है। विदेशी प्रकाशकों ने हमारी पुस्तकों के ऊंचे स्तर की प्रशंसा की है और अब हम विदेशी मार्केट में भी माल भेजने लगे हैं। हमने इंग्लैण्ड,[1] जापान,[2] आस्ट्रेलिया[3] जैसे देशों को टेक्निकल विषय सम्बन्धी पुस्तकें भारी संख्या में भेजी हैं।

मुझे इस बात से बहुत प्रसन्नता है जैन साहब।

हमें बम्बई में एक ऐसी शिपिंग फ़र्म चाहिए, जैसी कि आपकी है। हम चाहते हैं कि आप हमारे विदेशी ग्राहकों को पुस्तकें भेजने के सम्बन्ध में बीजक बनाने, माल को लपेटने, बांधने और रवाना करने का काम करें।

हम इस विषय में आपकी योग्य सेवा जरूर कर सकेंगे।

यह तो बताइये कि व्यापार के सम्बन्ध में शुल्क की अदायगी किस प्रकार से होगी और दूसरी क्या शर्तें होंगी?

हम आपको बीजक की रकम पर अढ़ाई प्रतिशत कमिशन देंगे। कमिशन निर्धारित करते समय बीजक की रकम में माल के किराये और इंश्योरेंस का खर्च शामिल नहीं होगा। कहिये क्या विचार है?

मुझे आपका सुझाव उचित जान पड़ता है। इसमें सन्देह नहीं कि इस व्यापार में हम दोनों को लाभ होगा। लेकिन निर्णय लेने से पहले मुझे अपने पार्टनर का सुझाव लेना चाहिए। मैं आपके फ़ोन द्वारा अपने पार्टनर से बात कर लेता हूं।

जी हां। अवश्य कर लीजिये।

* * *

कृपया नौ–आठ–छः–छः–पांच–शून्य: ९८६६५०: नंबर द्वारा बात करा दीजिये–हलो फ़िरोज। सुनिये, मुझे एक लाभदायक व्यापार का सुझाव मिला है। मैं इस विषय में आपसे बात करना चाहता हूं। मैं सीधा ऑफ़िस लौट रहा हूं।...क्या कहा? आपकी आवाज साफ़ सुनायी नहीं दे रही।...अच्छी बात है। आप मुझे जल्दी जवाब दीजियेगा। मैं एक दूसरी फ़र्म से भी इस सौदे की बात कर रहा हूं। और आज मुझे तय कर लेना है।

जी हां। मैं आपको एक घण्टे में फ़ोन करता हूं।

अच्छा। नमस्ते।

नमस्ते।


१. इंग्लैंड



२. जापान



३. ऑस्ट्रेलिया



पाठ सैंतालीस : ४७ :

सैंतालीसवां : ४७वां : पाठ

भाग–१

डॉक्टर, दंत-चिकित्सक और केमिस्ट

रोगों के इलाज के लिए भारत में भिन्न-भिन्न पद्धतियां प्रचलित हैं।
भारतीय आयुर्वेदिक पद्धति से इलाज करनेवाले वैद्य कहलाते हैं।
यूनानी पद्धति का अनुसरण करनेवालों को हकीम कहते हैं।
आधुनिक पश्चिमी "एलोपैथिक" पद्धति का अनुसरण करनेवालों को "डाक्टर" कहते हैं।
इलाज की आयुर्वैदिक पद्धति भारत में सबसे पुरानी पद्धति है।
कई सौ सालों से वैद्य इस पद्धति मे इलाज करते आ रहे हैं।



१. दांत का दर्द

प्रायः डाक्टरों की अपनी डिस्पेंसरियां होती हैं।
वे अपने नुस्खे अपनी डिस्पेंसरियों में अपने ही कम्पाउण्डरों द्वारा तैयार करके मरीजों को देते हैं।
बड़े शहरों में कई डाक्टर केवल मशविरा देते हैं।
वे मरीज की परीक्षा करके उसे नुस्खा लिख देते हैं।
यदि आपके दांत में दर्द[1] है, तो आप दांत के डाक्टर के पास जाइये।
वे आपके दांतों की परीक्षा करेंगे और अगर दर्दवाला दांत सड़ा नहीं है, तो दर्द से मुक्त करने की दवा देंगे और इसमें चांदी भर देंगे।
अगर वह सड़ गया है और इलाज करने योग्य नहीं है, तो वे उसे निकाल देंगे।



२. नाड़ी

यदि आपकी तबियत काफ़ी ख़राब है और आप डाक्टर के पास नहीं जा सकते, तो आप उन्हें देखने के लिए बुला सकते हैं।
वे आपसे बिमारी के विषय में पूछेंगे और नाड़ी[2] और जीभ[3] इत्यादि देखेंगे।
अच्छी तरह जांच करके अन्त में वे आपके रोग का निदान करेंगे, चिकित्सा निर्धारित करेंगे और औषधि-पत्र लिख देंगे।



३. जीभ

डाक्टरों के नुस्खे केमिस्टों द्वारा तैयार किये जाते हैं।
केमिस्टों की दुकान पर आपको सब तरह की पेटेण्ट औषधियां जैसे लोशन, टॉनिक, खांसी का मिक्श्चर, बेबी फूड, एस्पिरिन की गोलियां, मलहम-पट्टी, प्लास्टर आदि भी मिल सकती हैं।
वहीं आप गरम पानी की बोतल[4], स्पंज तथा शृंगार[5] की अन्य चीज भी खरीद सकते हैं।



५. शृंगार का सामान



४. गरम पानी की बोतल



पाठ सैंतालीस
सैंतालीसवां पाठ

भाग–२

डॉक्टर के यहां


१. सर दर्द


२. छींकना

नमस्ते डाक्टर साहब।

नमस्ते रमेशजी, आपको क्या कष्ट है?

डाक्टर साहब, बहुत अच्छा होता यदि आप यह पूछते कि मुझे कौन सा कष्ट नहीं है। मैं सभी संभावित बीमारियों से पीड़ित हूं, जैसे अनिद्रा, सर दर्द,[१] मंदाग्नि और कब्ज।

क्या आपका गला भी दुखता है?

जी हां, मुझे सर्दी भी लग गयी है, मेरा गला सूज गया है। छींक[२] और खांसी से परेशान हूं। उस पर, पिछले दिन एक दुर्घटना हो गयी, जिससे मेरे

दाहिने पैर और घुटने[२] में चोट और गर्दन में मोच आ गयी है। मैं सीढ़ियां चढ़ने पर जल्दी ही हांफ़ जाता हूं और सांस लेने में मुझे कष्ट होता है। लगता है कि जैसे शरीर में बिल्कुल शक्ति नहीं रही है।

यह तो दुःख की बात है। पर, मेरे ख्याल से वस्तु-स्थिति इतनी ख़राब नहीं है, जितनी कि आप समझते हैं। मैं अभी जांच करता हूं।

क्या मैं इस कौच पर लेट जाऊं?

जी हां। आपका दिल[३] और आप के फेफड़े तो बिलकुल ठीक हैं। अब अपना मुंह खोलिये और जीभ दिखाइये। नाक से गहरी सांस लीजिये।...मुझे किसी अंग में कोई विशेष रोग नहीं दिखायी पड़ता। पर यह स्पष्ट है कि आप दुर्बल और अशक्त हैं।

हां डाक्टर, मुझे कमज़ोरी तो बहुत है।

यदि आप अपने शरीर[४] की ओर ध्यान नहीं देंगे, तो आपके नाड़ी-संस्थान पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा और तब शायद आपको अस्पताल में रहना पड़े।

अब आप क्या सलाह देते हैं?

सबसे पहला परामर्श यह है कि आप चिन्ता छोड़ दीजिये, कुछ दिनों तक आप पूर्ण विश्राम कीजिये, भोजन के संबंध में नियमित हो जाइये, खाने में सलाद और फल लीजिये। अगर निरामिष नहीं हैं तो थोड़ी मात्रा में मांस भी खाइये। मादक पेय बिल्कुल छोड़ दीजिये। हो सके तो कुछ समय के लिए सिगरेट भी छोड़ दीजिये।

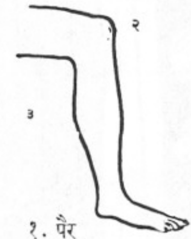
क्या आप कोई दवाई भी देंगे?

यह दवा बनवा लीजिये और दिन में तीन बार, चाय के दो चम्मच या खाने के एक चम्मच की मात्रा में भोजन के बाद लीजिये। यदि आप नियमित रूपसे यह दवा लेंगे, तो निश्चित ही आप दो तीन महीनों में पूर्ण स्वस्थ हो जायेंगे।

धन्यवाद डाक्टर, मैं दो दिनों के बाद फिर आपकी सेवा में आऊंगा।

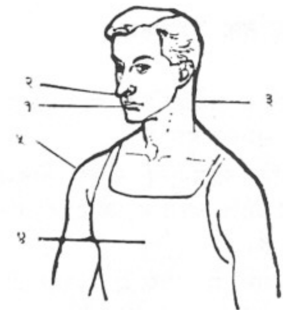
बहुत अच्छा। नमस्ते।

नमस्ते।



१. पैर
२. घुटना
३. टांग


३. दिल



१. मुंह ३. गला ४. छाती
२. नाक ५. दाहिना कंधा
४. शरीर



पाठ अड़तालीस : ४८ :

अड़तालीसवां : ४८वां : पाठ

भाग–१

सांस्कृतिक कार्यक्रम

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए भारत अपना प्राचीन वैभव संभाले हुए है।

लोकगीत, लोक-नृत्य, नाटक, खेल-तमाशे, शास्त्रीय संगीत आदि आज भी लोगों को कलाओं से परिचित रखते हैं।

छोटे कस्बों में नाटक मण्डलियां और संगीतकार लोगों का मनोविनोद करते हैं।

आधुनिक चलचित्र भी अब छोटे नगरों तक पहुंच गये हैं।

बड़े शहरों में तो सांस्कृतिक कार्यक्रम शिखर पर हैं।

बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास जैसे शहरों में तो बहुत बड़े-बड़े थियेटर, सिनेमाघर, रंग-भवन आदि हैं।

देश की विशालता के अनुकूल हर प्रान्त के लोग अपनी अपनी भाषा और अपनी-अपनी प्रथाओं के अनुसार सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

बड़े-बड़े संगीतकारों, नाटककारों, कवियों को प्रोत्साहन देने के लिए प्रांतीय सरकारें, सभाएं, स्पर्धाएं अपने खर्च से करती हैं।

नगरपालिकाओं और राज्य-सरकारों द्वारा आधुनिक ढंग के रंग-भवन और आधुनिक साज और सामान से सुसज्जित रंगमंच स्थापित हैं।

यदि आप दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता या मद्रास में एक शाम आनन्द से गुजारना चाहें और बालरूम डान्स या किसी रेस्टारेण्ट अथवा क्लब के खेल-तमाशे के कार्यक्रम में रुचि न रखते हो। तो आप किसी एयरकंडीशण्ड अथवा वातानुकूलित नृत्य-गृह में चले जायें और नाटक अथवा नृत्य देखें या शास्त्रीय संगीत सुनने का आनंद लें।

सिनेमा में जाकर कोई देशी या विदेशी फिल्म देख सकते हैं।

नृत्य में मणिपुरी,[२] कथाकली, भरत-नाट्यम[३] देखने को मिलेंगे। गुजरात का लोक-नृत्य गरबा-रास तथा पंजाब का भांगड़ा नाच देखते ही बनता है।

यदि आप इन नाचों की कुछ स्थायी मुद्राएं समझते हों, तो आपका मन स्वयं नाचने लगेगा।

संगीत-प्रेमी भारत के सांस्कृतिक संगीत से आनंद प्राप्त किये बिना नहीं रह सकते।

संगीत के साज़ जैसे सितार, सारंगी, वीणा, शहनाई, तबला बजानेवालों के कार्यक्रम भी अति मनोरंजक होते हैं।

हजारों लोग सभाओं में शांतिपूर्वक बैठकर संगीत की हल्की से हल्की लहरों को भी सुनते हैं।

मन बहलाने के लिए बैले, कठपुतलियों के नाच, कवि-सम्मेलन इत्यादि भी होते हैं।

लोक-मनोरंजन के लिए नौटंकियों के तमाशे, क़व्वालों की क़व्वालियां,[४] कीर्तनकारों के कीर्तन भी बहुत प्रिय हैं।



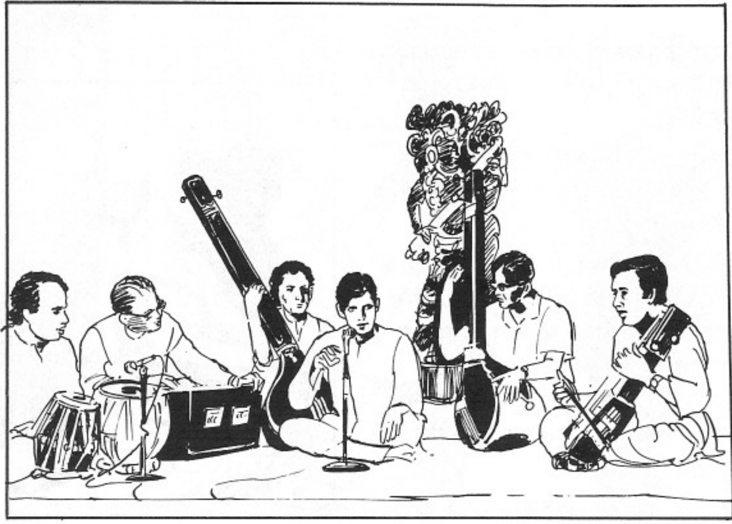
२. मणिपुरी

३. भरत-नाट्यम



४. क़व्वाली





पाठ अड़तालीस

अड़तालीसवां पाठ

भाग-१

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में बातचीत

आज मेरा विचार है कि मैं शाम को कोई मनोरंजक कार्यक्रम देखूं।

हां, मेरा विचार भी ऐसा ही है। आप कहें तो मैं भी आपके साथ चलूं?

अवश्य चलिये, सच्ची बात तो यह है कि मुझे आपके साथ जाने में बहुत आनन्द प्राप्त होगा।

जी हां, मैंने देखा है कि आप केवल मनोरंजन के लिए ही कार्यक्रम में नहीं जाते बल्कि आपको ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा भी रहती है।

मुझे कुछ मित्रों के साथ कई बार बम्बई के रंगभवन में मणिपुरी, कथाकली,[१] भरतनाट्यम, गरबा-रास, आदि देखने का अवसर मिला है। मैं इन नृत्यों की कुछ मुद्राएं समझने लगा हूं।



१. कथाकली

चलिये बम्बई से आपने यह लाभ प्राप्त किया। यहां दिल्ली में आप संगीत के साजों अर्थात सितार, सारंगी, वीणा, शहनाई, तबला आदि के विषय में जानकारी प्राप्त कर लीजिये।

वाह साहब, यह तो खूब सुझाव है, सच्ची बात तो यह है कि भारत के जिस भाग में भी जायें, वहां कोई न कोई सांस्कृतिक विशेषता मिलती है।

दक्षिण भारत का शास्त्रीय संगीत और उत्तरी भारत की ठुमरी, गज़ल और दादरा की तानें संगीत की महफिलों के बाद भी कानों में गूंजा करती हैं।

आज शाम को न तो कोई वाद्य संगीत का कार्यक्रम है और न ही गायन का कार्यक्रम। भारतीय विद्याभवन में कवि-सम्मेलन है जिस में देश भर के सुप्रसिद्ध कवि भाग ले रहे हैं। यदि वहां न जाना चाहें तो कोई पिक्चर देख सकते हैं।



२. कवि-सम्मेलन

पिक्चर तो मैं कहीं भी देख सकता हूं परन्तु कवि-सम्मेलन[२] में सम्मिलित होने का सुअवसर रोज-रोज नहीं मिलेगा।

अच्छा तो मैं अभी लौटते हुए टिकट खरीद लेता हूं और मैं आपके मकान पर आठ बजे आपको लेने आऊँगा। कवि-सम्मेलन ९ बजे आरम्भ होता है वहां जाने से पहले हम इकट्ठे भोजन करेंगे।

बहुत अच्छा। मैं ठीक आठ बजे तैयार रहूँगा। नमस्ते।

नमस्ते।



लोक-नृत्य
(नागालैंड)



पाठ उनचास : ४९ :

उनचासवां : ४९वां : पाठ

भाग–१

भारतीय लोक-कथा और पौराणिक दन्त-कथा

भारत एक प्राचीन देश है। इसलिए इसकी लोक-कथाएं, पौराणिक कथाएं और धार्मिक कथाएं भी बहुत प्राचीन हैं।

लोक-कथाएं और पौराणिक कथाएं जन-जीवन की संस्कृति और उनकी धार्मिक परम्पराओं को व्यक्त करती हैं।

लोक कथाओं में जनता के सुख-दुख, वीरता-बलिदान की बातें कही जाती हैं।

पौराणिक कथाएं उन तत्त्वों और मूल्यों के प्रतीक हैं, जो एक पीढ़ी ने दूसरी पीढ़ी को प्रदान किए हैं।

भारत के हर प्रदेश की अपनी विशेष लोक-कथाएं और लोकगीत हैं।

फिर भी इसके विभिन्न भागों में प्रचलित लोक-गाथाओं में भिन्नता के साथ-साथ एकता का प्रभाव पड़ता है।

देवी-देवताओं की कहानियां, उनकी मूर्तियां, उनके चित्र भारत के सब स्थानों पर प्रायः एक-से देखने में आते हैं।

भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत में पुराण नाम के ग्रंथ है। इनमें ऐतिहासिक तथ्य धार्मिक कथाओं में घुल-मिल गये हैं।

संस्कृत के दो महाकाव्य रामायण और महाभारत भी पौराणिक कथाएं हैं।

रामायण श्री राम का जीवन-चरित्र है और महाभारत में श्रीकृष्ण का जीवन तथा उनका उपदेश "गीता" है।



१. राधा-कृष्ण

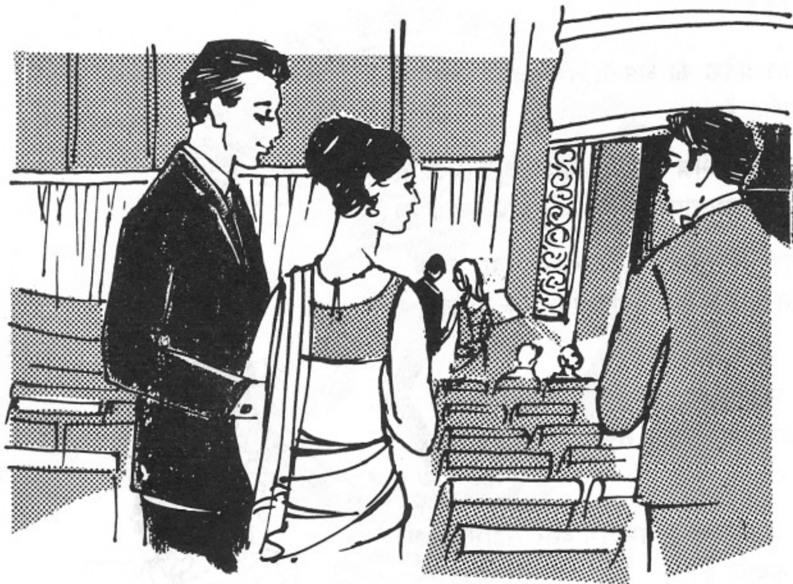
उनमें उच्च कोटि के साहित्य के साथ-साथ उन युगों के लोगों का जीवन-दर्शन भी मिलता है।

सामान्य जनता इनसे कथा का आनन्द और उपदेश का बोध-ग्रहण करती है।

वस्तुतः भारत की विभिन्न भाषाओं में लिखी हुई लोक-कथाएं अर्थात पौराणिक कथाएं इस देश के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक इतिहास के सूत्र हैं।



२. श्री कृष्ण अर्जुन को 'गीता' उपदेश दे रहे हैं



पाठ उनचास

उनचासवां पाठ

भाग-२

भारतीय लोक-कथा के विषय में वार्ता

क्यों जी, आपने रामलीला के नाटक देखे हैं?

अवश्य देखे हैं, बहुत मनोरंजक होते हैं। सच तो यह है कि रामायण ऐसी पौराणिक कथाओं में से है, जो लोक-मनोरंजन के साथ-साथ प्राचीन भारत के सामाजिक अथवा राजनैतिक जीवन के विषय में बहुत कुछ बताती है।

ठीक कहा आपने। लोक कथाएं जनजीवन के अनुभवों को व्यक्त करती हैं। इसी प्रकार से लोक गीत भी जनता के सुख-दुःख, वीरता और बलिदान का वर्णन करते हैं।

जी हां। मैं आपसे पूर्ण रूप से सहमत हूं।

बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि लोक-कथाएं और लोक-गीत जीवन के उन तत्त्वों और मूल्यों की ओर

संकेत करते हैं, जो समाज की दृष्टि में महत्त्वपूर्ण हैं तथा संस्कृति के पोषक होते हैं।

मैंने पिछले साल कानपुर में रामलीला का उत्सव देखा था। दशहरे से कुछ दिन पहले हर रोज शाम को रामायण के पात्रों की झाँकियां निकलती थीं और रात को रामायण के अध्यायों पर नाटक के रूप में लिखी हुई रामलीला रंगमंच पर खेली जाती थी।



१. लक्ष्मण, राम व सीता

उत्तर प्रदेश की ही क्या बात है, आप भारत के किसी भी प्रदेश में जायें, आपको धार्मिक कथाओं और लोक-कथाओं पर आधारित नाटक देखने को मिलेंगे।

परन्तु आश्चर्य होता है कि भारत इतना विशाल देश है और भिन्न-भिन्न भाषाओं के होते हुए भी यहां की लोक-कथाओं तथा लोकगीतों में एक प्रकार की समानता है।

आप इसका कारण तो जानते ही हैं?

जी हां, सहज रूप से इस एकता का कारण यह नजर आता है कि भारत की लगभग सब भाषाएं प्राचीन भाषा संस्कृत से प्रभावित हैं। संस्कृत की पौराणिक कथाओं में उच्च कोटि का साहित्य और महान जीवन-दर्शन मिलता है।

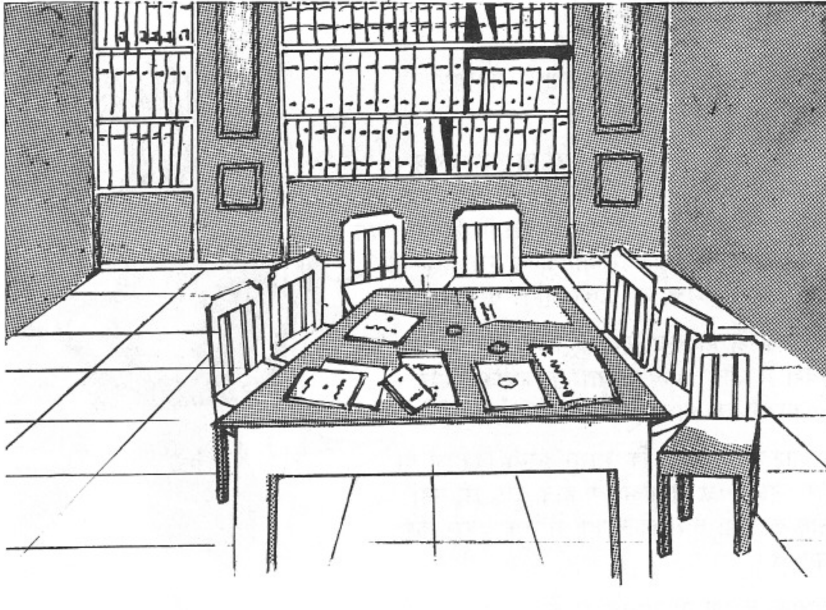
आपका विचार ठीक है। महाभारत और रामायण की पौराणिक लोक कथाओं के अतिरिक्त दूसरे नाटक, जैसे शकुंतला, राजा हरिश्चन्द्र, बिल्व-मंगल, पृथ्वी-वल्लभ, सत्यवान-सावित्री, राजा भोज तथा चन्द्रगुप्त मौर्य आदि भी बहुत पसन्द किये जाते हैं। धार्मिक कथाओं और लोक कथाओं का संबंध केवल प्राचीन युग से ही तो नहीं।



२. शकुंतला

ठीक कहा आपने, यदि इस विषय पर विचार करें तो आप देखेंगे कि भारत के मुगल शासनकाल, भक्तिकाल और अंग्रेजी शासनकाल से संबंधित कई एक लोक-कथाएं तथा लोकगीत प्रचलित हैं।

सत्य है, कई बार हम इन लोक-कथाओं और लोक-गीतों को सुनते हैं तो ऐसा जान पड़ता है कि ये इस देश के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक इतिहास के सूत्र हैं।



पाठ पचास : ५० :
पचासवां : ५०वां : पाठ

हिन्दी साहित्य के विषय में दो शब्द

हिन्दी-साहित्य का इतिहास लगभग एक हज़ार वर्ष पुराना है। इस छोटे-से पाठ में उसकी पूरी रूप-रेखा प्रस्तुत करना सम्भव नहीं है, इसलिए यहां कुछ प्रमुख कवियों और गद्य-लेखकों की चर्चा की जायगी।

भारत में ऐसा कौन है, जिसने तुलसीदास का नाम न सुना हो। वे हिन्दी के ही नहीं बल्कि भारत की दूसरी भाषाओं के महान कवियों में भी आदरणीय स्थान के अधिकारी हैं। उनका ग्रन्थ "रामचरित मानस" संसार के सबसे अधिक लोकप्रिय ग्रन्थों में से है। यह पुस्तक रामायण के नाम से प्रसिद्ध है।

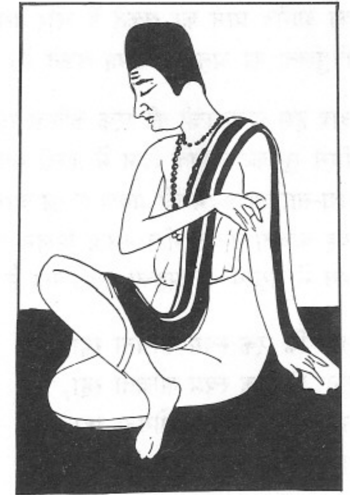
तुलसीदास[१] हिन्दी-साहित्य के भक्तिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं। उनके अतिरिक्त सूरदास[२], कबीर[३], जायसी, रहीम, रसखान और अमीर खुसरो जैसे प्रसिद्ध साहित्यकार उस युग में हुए हैं।



१. तुलसीदास

भक्तिकाल से पहले का काल हिन्दी साहित्य में आदिकाल कहलाता है। इस काल में वीरता के काव्य अधिक लिखे गये हैं, इसलिए इसे वीरगाथा काल भी कहते हैं। इस काल के सबसे प्रसिद्ध कवि चन्द बरदाई हैं।

आदिकाल और भक्तिकाल के पश्चात का काल रीतिकाल कहलाता है। इस काल के साहित्यकारों में बिहारी, और देव की साहित्यिक सेवाएं हिन्दी भाषा को प्राप्त हुईं।



२. सूरदास

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का प्रारम्भ १९वीं शताब्दी से होता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता कहलाते हैं। वे प्रमुख रूप से, कवि और नाटककार थे। उन्होंने हिन्दी-साहित्य को एक नयी दिशा प्रदान की।

भारतेन्दु के बाद हिन्दी-साहित्य अनेक दिशाओं में बढ़ा—कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, आलोचना-सभी विधाएं तेज़ी से विकसित हुई हैं। आधुनिक युग में प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, पन्त और निराला जैसे साहित्यकार हुए हैं। इस समय हिन्दी लेखक संसार के नवीनतम साहित्य के संपर्क में हैं। नये युग के अनुरूप नये शिल्प और नई शैलियों का विकास हो रहा है।
हिन्दी साहित्य का भण्डार देशी और विदेशी भाषाओं की महत्त्वपूर्ण कृतियों के अनुवाद से समृद्ध होता जा रहा है। यदि आप चाहें तो कालीदास का अभिज्ञान शकुन्तलं और शेक्सपीयर का हैमलेट हिन्दी में पढ़ सकते हैं।



३. कबीर

हिन्दी में अनेक महत्त्वपूर्ण दैनिक, साप्ताहिक और मासिक समाचारपत्र और पत्रिकाएं निकलती हैं; जिन के पाठकों की संख्या काफ़ी बड़ी है। इन में साहित्यिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा राजनैतिक विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाते हैं।

हिन्दी लेखकों की रचनाओं के भी अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। इस लिये लाखों लोग हिन्दी से अपरिचित होकर भी इस भाषा के लेखकों से परिचित हैं। परन्तु जो लोग इन कृतियों को मौलिक रूप में पढ़ सकते हैं वही इस भाषा की मनोहरता का आनंद प्राप्त कर सकते हैं और इस के साहित्य की विपुलता का अनुमान लगा सकते हैं।

अब हम बच्चनजी की एक कविता सुनाते हैं जिसे सुनकर आपके दिल में हिन्दी गद्य और पद्य-साहित्य पढ़ने की प्रबल इच्छा जागृत होगी। यह कविता उनके गीत-संग्रह मिलन यामिनी से है। इस में मनुष्य की महत्ता बताई गई है।

सुना कि एक स्वर्ग शोधता रहा,
सुना कि एक स्वप्न खोजता रहा,
सुना कि एक लोक भोगता रहा,
मुझे हरेक शक्ति का प्रमाण है।
हरेक मनुष्य
सुना कि सत्य से न भक्ति हो सकी,
सुना कि स्वप्न से न मुक्ति हो सकी,
सुना कि भोग से न तृप्ति हो सकी,
विफल मनुष्य सब तरफ समान है।

विराग मग्न हो कि राग रत रहे,
विलीन कल्पना कि सत्य में दहे,
धुरीण पुण्य का कि पाप में बहे,
मुझे मनुष्य सब जगह महान है।



श्री. हरिवंशराय बच्चन